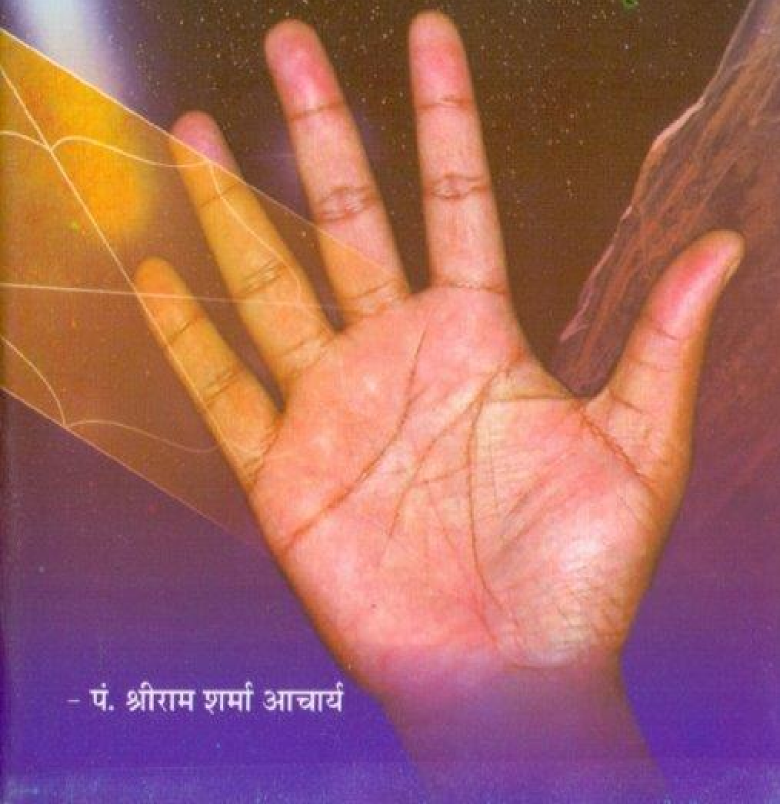
हस्तरेखा विज्ञान



- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

हस्तरेखा विज्ञान



लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३ मूल्य : ९.०० रुपये

हस्तरेखा विज्ञान

पशु विद्या के जानकार लोग घोड़ा, गाय, भैंस, बैल, ऊँट आदि के अंगों की बनावट पर बारीकी से नजर डालते हैं और यह बता देते हैं कि यह पशु, इस नस्ल का है। इसके गुण, कर्म और स्वभाव इस प्रकार के होंगे। उस पशु को काम में लाकर परीक्षा करने के लिए बहुत समय चाहिए। इतना समय खरीद-फरोख्त में नहीं मिलता, यह कठिनाई बहुत बड़ी मालूम पड़ती, अगर "शारीरिक चिह्नों को देखकर स्वभाव जानने की विद्या" का आविष्कार न हुआ होता। परंतु अब वैसी कठिनाई नहीं है, एक मामूली किसान मोटेतौर से देख-भाल करके झट बता देता है कि यह बैल कैसा निकलेगा ? गाय-भैंस के दूध-घी के बारे में भी वह आसानी से अंदाजा लगा लेता है। इसी प्रकार ऊँट, घोड़ा, हाथी आदि की खरीद-फरोख्त करने वाले लोग भी एक दृष्टि डालकर पशु के भीतर का हाल जान लेते हैं। उनका अंदाज कुछ अपवादों को छोड़कर आमतौर से ठीक ही निकलता है।

आकृति देखकर पशुओं का स्वभाव जानने की विद्या इतनी सच साबित हुई कि अब उसमें संदेह और मतभेद की अधिक गुंजाइश नहीं रही। अनुभव ने उसकी प्रामाणिकता साबित कर दी है। यह सब देखते हुए भी जो लोग आकृति देखकर मनुष्य की पहचान के बारे में शक करते हैं, उसे मिथ्या कहते हैं, उनकी बुद्धि को क्या कहा जाए ? वास्तविकता यह है कि जिस प्रकार पशु के बाह्य चिह्न देखकर उसके भीतर के गुण जाने जा सकते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी पहचाना जा सकता है। गुणों से आकृति की रचना होती है। जिसका जैसा स्वभाव है, उसकी शारीरिक आकृति भी वैसी ही बनने लगेगी। हम देखते हैं कि जब कोई आदमी

झल्लाया हुआ हो, झुँझला रहा हो, तो उसके चेहरे की सिकुड़न झुर्रियाँ एक खास किस्म से तनी होती है, मस्तक पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, भौंहों में ऐंठ पड़ जाती है, कनपटी के पास चमड़ा सिकुड़ जाता है, आँखें चिपटी-सी रहती हैं, गालों की मांसपेशियाँ तनती हैं। इसी प्रकार शोक, चिंता, दुःख, पश्चात्ताप, विरह, वेदना, दर्द, हानि, खुशी, लाभ, संतोष, अभिमान आदि की अवस्था में भी अलग-अलग प्रकार की आकृतियाँ—भाव-भंगिमा बनती हैं। जैसे-जैसे अंतरंग अवस्था बदलती रहती है, वैसे-वैसे ही चेहरे की भाव-भंगी भी बदल जाती है।

जब मन में कोई भाव स्थायी रूप से आता है, तो आकृति भी उसी के अनुसार बदल जाती है, किंतु यदि कोई मनोभाव स्थायी रूप से अपने ऊपर अधिकार जमा ले, तो उसकी छाया अंग-प्रत्यंगों पर स्थायी रूप से प्रकट होने लगती है। क्रोधी आदमी की आँखों में लाल रंग के डोरे पड़ने लगते हैं। स्वार्थी आदमी की आँखों में तिरछापन आ जाता है। माथे पर अधिक सलवटें देखकर यह अनुमान लगाया जाता है कि इस आदमी को भावनाओं का आवेश अधिक आता है। हमारी 'स्वस्थ और सुंदर बनाने की विद्या' नामक पुस्तक में अनेक तर्क और प्रमाणों के साथ यह साबित किया गया है कि काम, क्रोध, लोभ, शोक, चिंता आदि के कारण सैकड़ों प्रकार की बीमारियाँ पैदा होती हैं, कुरूपता आती है और कमजोरी तथा अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार सद्भावों से सद्गुणों से 'स्वास्थ्य तथा सौंदर्य' की प्राप्ति होती है। इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि मनुष्य का जैसा स्वभाव तथा विचार होता है वैसी ही उसकी आकृति, शारीरिक दशा बनने लगती है। शरीर को देखकर मनुष्य के मनोभावों को जानने की विद्या सिखाने वाली पुस्तक "आकृति देखकर मनुष्य की पहचान" प्रकाशित हो चुकी है। आकृति और मनोभावों का आपस में बहुत घना संबंध है; इतना

घना कि एक को देखकर दूसरे को पहचानने में कुछ विशेष अड़चन न होनी चाहिए।

शरीरशास्त्र के अनुभवी विद्वानों का कथन है कि मस्तिष्क से निकलकर ज्ञान-तंतु शरीर के विभिन्न अंगों में फैल गए हैं। यों तो ये ज्ञान-तंतु शरीर के हर एक हिस्से में मौजूद हैं, परंतु सबसे अधिक मात्रा में ये तंतु हाथों की ओर गए हैं। मस्तिष्क में जो विचारधारा काम कर रही है, चित्त में जैसे विश्वास जम गए हैं, हृदय में जैसी धारणा है उसका प्रकटीकरण हाथ को देखकर आसानी से हो सकता है। आकृति विज्ञान के विशेषज्ञ और शरीर विज्ञान के आचार्य एक स्वर से इस बात का समर्थन करते हैं कि शरीर की भीतरी दशा का हाथों को देखकर परिचय प्राप्त किया जासकता है। वैद्य लोग हाथ की जड़ में चलने वाली नाड़ी को देखकर रोगों का निदान करते हैं। कारण यह है कि ज्ञान-तंतुओं का हाथ में अत्यधिक बाहुल्य होने के कारण शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा हाथ की नाड़ियाँ अधिक स्पष्ट होती हैं। चिकित्सक लोग नाखून की परीक्षा करने से भी रोगों का निर्णय करते हैं, इसका कारण भी हाथों में अधिक मात्रा में रहने वाले ज्ञान-तंतु ही हैं।

जिन्होंने डॉक्टरी विद्या पढ़ी है, वे जानते हैं कि लकवा रोग से कुछ समय पूर्व हथेली की रेखाओं में बड़ा भारी परिवर्तन होने लगता है। अक्सर बहुत-सी छोटी-मोटी रेखाएँ बिलकुल गायब हो जाती हैं। इससे प्रतीत होता है कि हाथ के द्वारा न केवल वर्तमान काल की स्थिति जानी जाती है, वरन् यह भी जाना जा सकता है कि भविष्य में कैसी-कैसी घटनाएँ घटित होने वाली हैं ? वर्तमान से भविष्य का बहुत बड़ा संबंध है। अमुक व्यक्ति आज यह कर रहा है, यह जान लेने के पश्चात् यह अनुमान लगाना सहज है कि उसका भविष्य कैसा होगा ? मोटी बुद्धि वालों को भविष्य की जानकारी प्राप्त करना कोई चमत्कार जैसी वस्तु दिखाई पड़ती है। परंतु वास्तव में वह इतनी आश्चर्यजनक नहीं है, जितनी कि समझी

जाती है। जब बुखार आने को होता है, तो कुछ समय पहले देह टूटने लगती है। बच्चा पैदा होने से भी नौ मास पहले स्त्री का पेट बढ़ने लगता है। आँखें जब दुखने आती हैं, तो कुछ समय पहले पूर्व लक्षण प्रकट होने लगते हैं, दाँत गिरने से पहले उनका हिलना शुरू हो जाता है, इसी प्रकार पूर्व लक्षणों के द्वारा मनुष्य का भविष्य भी जाना जा सकता है। जैसी आंतरिक दशा होती है, बाह्य परिस्थितियाँ उसके अनुसार ही प्राप्त होकर रहती हैं।

हाथ की रेखाओं पर आप विशेष रूप से ध्यान दें, तो आपको मालूम पड़ेगा कि वे घटती-बढ़ती रहती हैं। बहुत-सी नई रेखाएँ पैदा होती हैं और बहुत-सी गायब हो जाती हैं। कई की लंबाई कम होती है, कई बढ़ जाती है, किसी में शाखा-प्रशाखाएँ फूटती हैं, कुछ एक तरफ़ को झुकती हैं, कुछ मोटी से पतली और पतली से मोटी हो जाती हैं। इस प्रकार के परिवर्तन निरर्थक नहीं होते, वरन् उनमें कुछ खास रहस्य छिपा होता है। मनुष्य की आंतरिक दशा के हेर-फेरों का प्रभाव हस्तरेखाओं पर पड़ता है, तदनुसार उन रेखाओं में लौट-फेर शुरू हो जाता है। इस परिवर्तन को देखकर अनुभवी व्यक्ति आसानी से पता लगा सकते हैं कि अमुक व्यक्ति सूक्ष्म परिस्थितियाँ किस दशा में चल रही हैं और उनके कारण निकट भविष्य में किस प्रकार की बाह्य परिस्थितियाँ बनना संभव है ? यह अनुमान कभी-कभी कुछ गलत भी हो सकते हैं, जिसके कारण अक्सर दो देखे जाते हैं—(१) परीक्षक का सूक्ष्म बुद्धि तथा अनुभवी न होना (२) स्वभाव का इतना नया परिवर्तन, जिसका-अंकन रेखाओं पर ठीक प्रकार न हो पाया हो। स्वभाव में अचानक जबरदस्त परिवर्तन हो जाने पर भविष्य की रचना भी तुरंत ही बदल जाती है, परंतु हाथ की रेखाएँ इतनी जल्दी नहीं बदलतीं, उनके बदलने में कुछ देर लगती है। इस नए परिवर्तन की पूरी जानकारी प्रकट न हो, तो हस्तरेखाएँ देखकर जो फल बताया गया है, वह गलत साबित हो सकता है। ऐसे अपवाद कम होते हैं,

कभी-कभी होते हैं, तो भी होते अवश्य हैं। इसलिए सामुद्रिक विद्या में प्रवेश करने वाले को, परीक्षार्थी तथा परीक्षक को, यह कठिनाई भली प्रकार ध्यान में रखना चाहिए और आरंभ में यदि थोड़ी सफलता मिले तो, उससे निराश न होकर अधिक सूक्ष्म बुद्धि का प्रयोग करके वास्तविकता तक पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिए।

हाथ की रेखाएँ मुट्ठी बाँधने का फल है या काम करने से हथेली में सिकुड़न पड़ जाती है, ऐसा कहकर सामुद्रिक विद्या के महत्त्व को अस्वीकार करने वालों का मत अधिक बुद्धिसंगत नहीं जान पड़ता, क्योंकि यदि ऐसा ही होता तो धनी लोग जो हाथ से कुछ काम नहीं करते उनके हाथ में रेखाएँ न होतीं, या कम होतीं इसके विपरीत किसान और मजदूर जो सदा कठिन परिश्रम में लगे रहते हैं, उनके हाथ में बहुत अधिक रेखाएँ हुआ करतीं, परंतु ऐसा देखा नहीं जाता। आप देखेंगे कि जिन लोगों का जीवन एक निश्चित धारा पर बहता चला जा रहा है और जिनमें कोई सद्‌गुण या दुर्गुण नहीं है, उनके हाथ में कम रेखाएँ होती हैं क्योंकि उनके जीवन में विशेष हलचलें पैदा होने की संभावनाएँ नहीं होतीं। जो लोग अस्थिर चित्त के होते हैं, चढ़ाव-उतार के कारोबार करते हैं, हलचलों में भाग लेते हैं, उनके जीवन में सुख-दु:खों की, लौट-फेरों की, बड़ी जोखम रहती है, तदनुसार उसके हाथों में रेखाएँ भी अधिक होती हैं। यदि यह बात न होती और गर्भ में बालक के मुट्ठी बाँधे रहने के कारण ही हाथ में सलवटें पड़ा करतीं, तो उनकी संख्या सभी बालकों में करीब-करीब समान होनी चाहिए थी, परंतु देखने से विदित होता है कि नवजात शिशुओं की रेखाओं की संख्या में भी भारी भिन्नता पाई जाती है।

परीक्षणों के आधार पर हमें इसी नतीजे पर पहुँचने के लिए विवश होना पड़ता है कि हाथ की रेखाएँ अपने अंदर कुछ रहस्य छिपाए हुए हैं। वह रहस्य यह है कि "मनुष्य की भीतरी परिस्थितियों की और भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं की

हस्तरेखाएँ एक प्रकार की सचित्र लिखावट हैं, जिसे पढ़कर अपने बारे में और दूसरों के बारे में बहुत-सी अज्ञात बातों को जाना जा सकता है।

सामुद्रिक विद्या का इतिहास बहुत पुराना है। भारतवासी पुरातन काल से इससे लाभ उठाते आ रहे हैं, यहाँ से इस विद्या का अन्य देशों में प्रसार हुआ और चीन, तिब्बत, फारस, मिश्र, यूनान आदि देशों में भी यह विद्या फैली। ईसा से तीस हजार वर्ष पहले चीन में हस्तरेखा जानने वाले विद्वान मौजूद थे—ऐसा पता चलता है। यूनान देश में पीलीर्मन, अलातूनिया, प्लिनी, हिस, पानस आदि कितने ही विद्वान इस विद्या के धुरंधर ज्ञाता हो चुके हैं। इतिहास में ऐसा उल्लेख मिलता है कि सम्राट सिकंदर को हिसपानिक नामक विद्वान ने हस्तरेखा संबंधी एक पुस्तक स्वर्णाक्षरों में लिखकर भेंट की थी। जब छापेखानों का आविष्कार हुआ ही था कि बाइबिल के बाद सामुद्रिक शास्त्र संबंधी एक 'डिक कुंट सिरोमन' नामक पुस्तक जर्मनी देश में सन् १३७५ ई० में छपी। इसके बाद वहाँ सन् १४६० ई० में एक दूसरी पुस्तक 'शरोमैंटिआ अरिस्टजिज कमफिजुर्टस' छपी। ये दोनों पुस्तकें आज भी ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित हैं। इंगलैंड में चौथे जार्ज के शासन काल में यह विद्या इतनी अधिक बढ़ी कि धूर्त लोग इसके द्वारा अनुचित लाभ उठाने लगे। ऐसे लोगों के विरुद्ध वहाँ की पार्लियामेंट ने एक "एन्टी पामिप्ट्री बिल" पास किया।

योरोपीय देशों ने हस्तरेखा विद्या के संबंध में महत्त्वपूर्ण खोजें की और विज्ञान द्वारा वह साबित किया कि यह विद्या शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान के आधार पर अवलंबित है। वैज्ञानिक मेन्सीनर ने अपने परीक्षणों द्वारा यह साबित कर दिखाया कि हाथों में एक विशेष प्रकार के लाल रंग के परमाणु होते हैं, जो रेखाओं के सहारे-सहारे बढ़ते और पीछे हटते हैं। डा० ओसकर ने इस विषय

में अच्छे ग्रंथ लिखे हैं। मि० शेरो की पामिस्ट्री दुनिया भर में ख्याति प्राप्त कर चुकी है।

सामुद्रिक विद्या के प्रेमियों को यह बात विशेष रूप से ध्यान रखने की है कि हाथ की विभिन्न रेखाओं पर तथा हाथ की बनावट पर विस्तृत विचार करने के उपरांत ही किसी निर्णय पर पहुँचना चाहिए। केवल एक रेखा या अमुक चिह्न को देखकर ही कोई निश्चित सम्मति प्रकट न कर देनी चाहिए। चतुर वैद्य कई प्रकार की परीक्षाओं द्वारा रोग की जानकारी प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार विभिन्न पहलुओं पर विचार करके ही हाथ का फल निर्धारित करना चाहिए।

हाथ

प्रायः दो प्रकार के हाथ देखे जाते हैं। किसी का हाथ मुलायम होता है, दबाने से रूई की तरह नरम मालूम पड़ता है। किसी का हाथ कड़ा होता है, दबाने से कड़ी हड्डियों और कठोर मांसपेशियों का अनुभव होता है। कोमल हाथ वाले धनी, भावुक, आरामपसंद, मधुरभाषी, मन में छिपाव रखने वाले, चंचल मन वाले पाए जाते हैं। थोड़ी-सी खुशी में वे फूल जाते हैं और थोड़ी-सी चिंता, बीमारी, आफत, आशंका उनको भयभीत एवं व्याकुल बना देती है।

जिनका हाथ कठोर, कड़ा और मजबूत होता है, वे विचारशील, गंभीर, दूरदर्शी, परिश्रमी, धुन के पक्के होते हैं। उनका स्वभाव रूखा और कर्कश होता है। उनके मित्र थोड़े होते हैं, पर जो होते हैं, सच्चे और स्थायी होते हैं। कठिनाइयों से भयभीत होने की अपेक्षा साहसपूर्वक मुकाबला करना उन्हें ज्यादा पसंद होता है। ऐसे व्यक्ति या तो परमार्थी होते हैं या फिर घोर स्वार्थी पाए जाते हैं। साहसपूर्ण और खतरनाक काम करने में कठोर हाथ वालों की रुचि अधिक होती है।

हाथ की बनावट—हाथ की बनावट सात प्रकार की मानी गई है—(१) समकोण, (२) चमसाकार, (३) दार्शनिक, (४) कलाकार या व्यावसायिक, (५) निकृष्ट, (६) आदर्शवादी या विषम, (७) मिश्रित।

बनावट को देखकर यह आसानी से जाना जा सकता है कि कौन हाथ किस श्रेणी का है ? अब इनका पृथक्-पृथक् विवेचन किया जाता है।

(१) **समकोण हाथ**—चौकौर हथेली वाले हाथ समकोण कहे जाते हैं। जिसकी हथेली की लंबाई-चौड़ाई बराबर हो तथा चारों उँगलियों को मिलाकर चौड़ाई एवं बीच की उँगली की लंबाई के बराबर हो, वह हाथ समकोण कहा जाता है। ऐसे हाथ सीधे, सपाट, कोमल, मुलायम और भरे हुए होते हैं। समकोण हाथ सबसे अच्छा समझा जाता है।

ऐसे व्यक्ति मिलनसार, उत्साही, नम्र स्वभाव तथा स्वाभिमानी होते हैं। असभ्य व्यवहार उन्हें सहन नहीं होता। वे नेता होते हैं, पर आज्ञापालन का गुण उनमें विशेष रूप से होता है। यदि उँगलियाँ गठीली हों, तो सत्यवादी, शांत स्वभाव, विचारशील, गंभीर और दृढ़ निश्चयी होता है। दयालु होते हुए भी अंधविश्वास से दूर रहता है। किंतु यदि उँगलियाँ नरम और सुडौल हों, तो सजावट, फैशन-परस्ती, सौंदर्य, मित्रता का भाव अधिक रहेगा। गंदगी उन्हें जरा भी बरदाश्त नहीं होती। समकोण हाथ वाले अक्सर सुयोग्य, डॉक्टर, व्यापारी, वकील, अन्वेषण तथा बुद्धिजीवी होते हैं। वे सच्चरित्र होते हैं, पर विचारों में स्थिरता का बड़ा अभाव रहता है।

(२) **चमसाकार हाथ**—जिस हाथ की उँगलियाँ कुछ मुड़ी हुई टेढ़ी-सी रहती हैं और कलाई के पास हथेली की चौड़ाई अधिक होती है। उँगलियों के पास अथवा हथेली के पास चौड़ाई कम होती है और उँगलियों के पास अधिक होती है, ऐसे हाथ को चमसाकार हाथ कहते हैं।

जिसकी हथेली कलाई के पास अधिक चौड़ी होती है, उनके कार्य बहुत ऊँचे आदर्शों से भरे होते हैं, फिर भी वे आम लोगों को फायदा नहीं पहुँचा पाते। उन्हें अपने कार्यों में बहुत अधिक सहायता नहीं मिलती। इसके विपरीत वे लोग जिनकी हथेली उँगलियों के पास अधिक चौड़ी होती है, बहुत बड़े आदर्शवादी नहीं होते। समय की प्रगति को देखते हुए वे काम करते हैं। कार्य-कुशलता की अधिकता के कारण वे ख्याति प्राप्त करते हैं और अपने कार्यों में बहुत अधिक सफल रहते हैं।

चमसाकार हाथ की कठोर उँगलियाँ उद्योगी और परिश्रमी होने का प्रमाण है। इनका शरीर और मन किसी-न-किसी कार्य से लगा रहता है; ऐसे हाथ आविष्कारक, इंजीनियर, मल्लाह, व्यापारी तथा समाज-सुधारकों के देखे जाते हैं। गाँठदार उँगलियों का होना मन में छिपाव रखने और गंभीर होने का चिह्न है। सपाट और चिकनी उँगलियाँ दस्तकारी तथा कला-कौशल पसंद लोगों की होती हैं।

ऐसे हाथ में अँगूठा छोटा हो, तो झगड़ालू होना प्रकट करता है, बड़े अँगूठे वाले शासक, विलासात्मक काम करने वाले और शूरवीर होते हैं।

(३) दार्शनिक हाथ—यह हाथ गठीला, लंबा और बीच में झुका हुआ होता है। उँगलियों की हड्डियाँ तथा जोड़ उभरे हुए और नाखून लंबे होते हैं।

इस प्रकार का हाथ मनुष्य की दार्शनिकता का द्योतक है। उनकी कल्पना, इच्छा और विचारधारा, सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा बहुत ऊँची होती है। सुख भोगने की अपेक्षा तत्त्वज्ञान को प्राप्त करना उन्हें अधिक पसंद होता है। मित्रतापूर्ण ढंग से लोगों से मिलते हैं, तो भी किसी से उनको घनिष्ठ मित्रता नहीं होती। ऐसे मनुष्यों के पास जो थोड़ा-बहुत पैसा होता है, उसका खर्च

परोपकारी कार्यों में हुआ करता है, श्रद्धा की अपेक्षा तर्क पर उनका आधार अधिक रहता है।

ऐसे हाथ में गठीली उँगलियाँ हों, तो वह व्यक्ति कोई महत्त्वपूर्ण कृति अपने पीछे छोड़ जाता है। चिकनी उँगलियों वाले लोग रहस्यमय होते हैं कि उनके पेट की थाह पाना अत्यंत कठिन होता है। दार्शनिक हाथ वाले जीवन भर एक प्रकार से स्थायी ही बने रहते हैं, उनके कार्य और वचनों में सद्भावना तथा प्रामाणिकता की मात्रा ज्यादा पाई जाती है।

(४) **व्यावसायिक हाथ**—साधारण लंबाई, चौड़ाई का हाथ जिसकी उँगलियाँ जड़ में मोटी और छोरों पर पतली होती हैं—व्यावसायिक या कलाकार हाथ कहा जाता है।

इस प्रकार के हाथ वाले लोग उतावले, चंचल स्वभाव, बातूनी, शेखीखोर, भावुक और बहकावे में जल्दी आ जाने वाले होते हैं। जरा-सी घटना से बहुत अधिक प्रभावित हो जाते हैं। थोड़े-से झगड़ों को कारण किसी से लड़-मरना या थोड़ी-सी मित्रता से बहुत अधिक त्याग करने को उद्यत हो जाना इनकी विशेषता होती है। कलाकार का अर्थ यह नहीं है कि ऐसे लोग चित्रकार, गवैये या मूर्तिकार आदि होते हैं। इनकी इच्छा तो ऐसे कार्यों की ओर अधिक होती है, परंतु अपनी मानसिक निर्बलता के कारण उतनी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, अतएव दूसरों के कलापूर्ण कार्य, अभिनय, चित्र आदि देखकर इन्हें संतोष करना पड़ता है। काम शुरू करना और अधूरा छोड़ना, यह दुर्गुण इनके पल्ले बँधा होता है। बिना सोचे-समझे झट किसी काम के लिए तैयार हो जाने का फल यही हो सकता है कि उसे कठिनाई पड़ने पर अपने कार्य अधूरे छोड़ने पड़ें।

इस प्रकार के हाथ वाले की उँगलियाँ अगर सख्त हों, तो कलापूर्ण कार्यों में उसे सफलता मिलती है, व्यापार में धन कमाता है और चुने हुए आदमियों में गिना जाता है, किंतु यदि उँगलियाँ

पतली और ऐंठी हुई-सी हों, तो ईर्ष्या, द्वेष, धूर्तता व झूँठ, छल, कपट आदि विकारों का होना प्रकट होता है। यदि यह हाथ बहुत अधिक नरम हो, तो लापरवाही का प्रतीक है। कर्ज लेकर न देना, विषय वासना की ओर आकर्षित रहना, मनोरंजन में अधिक रुचि रखना आदि हलके दर्जे की बातें भी उनके स्वभाव में शामिल देखी जाती हैं।

(५) निकृष्ट हाथ—जरूरत से ज्यादा छोटा, मोटा, भरा, भारी और बेडौल बनावट का यह हाथ होता है। अँगूठे की लंबाई तो इस छोटेपन के अनुपात से भी कम होती है। हाथ खुरदरा होता है और रेखाएँ बहुत थोड़ी पाई जाती हैं। इस प्रकार के हाथ वाले मंद बुद्धि होते हैं, दिमाग कोई ऊँची बात नहीं सोच सकता और न उनमें ऐसे गुण होते हैं, जिनके द्वारा मित्रों की संख्या बढ़ा सकें या कोई व्यापारिक सफलता प्राप्त कर सकें। इसलिए ऐसे आदमी मेहनत मजूरी से अपना गुजारा करते हैं। उजड्डता, असभ्यता और बेहूदगी उनमें अधिक रहती है। अपना स्वार्थ साधन करने के लिए बुरे-से-बुरे काम करने को वे तैयार हो जाते हैं। निकृष्ट हाथ वाला कोई व्यक्ति आज तक महापुरुष बनकर नहीं निकला। वे तो आहार, निद्रा, कलह और मैथुन में मग्न रहते हैं और पाशविक इच्छा, आकांक्षाओं के साथ इस दुनिया से कूच कर जाते हैं।

(६) आदर्शवादी हाथ—सुंदर, लंबा, तंग, मुलायम, चिकना, कोमल यह विषम हाथ के लक्षण हैं। उँगलियाँ अधिक पतली व नोकदार जड़ में कुछ हलकी और ऊपर कुछ भारी होती हैं। इस हाथ को आदर्शवादी भी कह सकते हैं।

ऐसे आदमी बड़े-बड़े मनसूबे बाँधते हैं, बड़ी-बड़ी ऊँची आशा और कल्पनाएँ करते हैं, विचारों की दुनिया में उड़ते, गिरते और डूबते उतराते रहते हैं। व्यावहारिक ज्ञान, दुनियादारी की जानकारी और क्रियाकुशलता न होने के कारण उनकी इच्छाएँ शेखचिल्ली की खामखयाली बनी रहती हैं। ऐसे आदमी देवी-देवताओं को वश में

करने, संत-महंतों की कृपा प्राप्त करने, तंत्र-मंत्रों द्वारा सिद्धियाँ प्राप्त करके चुटकियों में बड़े-बड़े काम कर लेने के मनसूबे बाँधा करते हैं। ज्योतिष, जन्मपत्री, देवकृपा, स्वर्ग आदि के कल्पना जगत् में विचरण करते हुए उन्हें बड़ा मजा आता है। तर्क का अभाव और अंधविश्वास की अधिकता रहती है। थोड़ी-सी आशंका, चिंता या शोकजनक स्थिति आने पर वे बहुत व्याकुल और भयभीत होते देखे जाते हैं।

योजनाएँ आकाश में और योग्यता पाताल में होने के कारण यह विषम हाथ कहा जाता है। ऐसी उड़ानें उड़ना जिनको पूरा न किया जा सके, कोरा आदर्शवाद है, इसीलिए इस प्रकार का हाथ आदर्शवादी हाथ भी कहा जाता है।

(७) **मिश्रित हाथ**—पीछे जिन छह प्रकार के हाथों का वर्णन किया गया है, उनमें से किसी का भी पूर्ण रूप से लक्षण न मिलता हो, वरन् थोड़े-थोड़े लक्षण कई हाथों के पाए जाएँ, तो उसे मिश्रित हाथ समझना चाहिए। जिस-जिस प्रकार के जितने-जितने लक्षण मिलते हों, उन-उन हाथों के उतने-उतने फलों को मिलाकर ही एक मिश्रित परिणाम पर पहुँचना चाहिए। मिश्रित हाथों की संख्या अधिक देखी जाती है, विशुद्ध रूप से इस प्रकार के हाथ कम मात्रा में देखे जाते हैं। मिश्रण का ठीक-ठीक अनुसंधान करके उन सबका यथोचित भाग लेते हुए कोई फल कहना सूक्ष्मदर्शी आत्मविद् लोगों का काम है। सामुद्रिक विद्या को ठीक-ठीक रूप से समझने के लिए ऐसी ही सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता है।

हथेली

नियमित रूप से परिश्रम के साथ काम करने वालों की हथेलियाँ बड़ी होती हैं : उद्योगी, कर्तव्य परायण, पराक्रमी और उत्साही पुरुषों की हथेलियाँ बड़ी-बड़ी होती हैं। छोटे हाथ वाले उतने पराक्रमी, दृढ़, निश्चयी और लगन के साथ काम करने वाले

नहीं होते। बातें बहुत करते हैं, बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं, परंतु छोटा हाथ उन्हें कुछ कहने लायक काम करने नहीं देता। यह भी देखा गया है कि बड़ी हथेली वाले छोटे अक्षर लिखते हैं और मोटी हथेली वालों से बड़े-बड़े अक्षर लिखे जाते हैं।

जिनकी हथेली मोटी-मुलायम और भारी होती है—ऐसे व्यक्ति व्यसनी, विषयी और इंद्रिय-लोलुप देखे जाते हैं। चौड़ी हथेली वाले मनुष्य उदार, भले मानस, दूसरों के साथ नेकी करने वाले और अनुभवी होते हैं। कैसी ही भली-बुरी स्थिति में वे रहें, परंतु दिल उनका ओछा न होगा। उदारता की मात्रा हर हालत में उनमें अधिक रहेगी।

लंबी और नरम हथेली वाले आरामपसंद और आलसी देखे जाते हैं। पर जिनकी हथेली सूखी, कड़ी और पतली हो, उनमें निरुत्साह और डरपोकपन भी मिलेगा। देखने में मोटे, तगड़े हों, तो भी उनमें शारीरिक और मानसिक जीवनीशक्ति कम पाई जाएगी, जरा-से परिश्रम में थकान महसूस करने लगेंगे।

जिनकी हथेली में बीचोंबीच गड्ढे की-सी गहराई होती है, उन्हें आमतौर से अपने दुर्भाग्य का रोना रोते देखा जाता है। पर गृहस्थ में उन्हें निराशा मिलती है। स्त्री, पुत्र तथा अन्य घर वालों से उन्हें संतोषजनक सद्व्यवहार प्राप्त नहीं होता, मनोमालिन्य और गृह-कलह से सदा ही वे उद्विग्न रहते हैं। स्वास्थ्य भी ऐसे लोगों का गिरा ही रहता है।

मजबूत किंतु मुलायम हथेली किसी मनुष्य के मनस्वी, साहसी और शूरवीर होने का लक्षण है। ढीली टूटी-सी, बिखरी-सी या जकड़ी हुई-सी हथेली उन अभागों की होती है, जो काम के डर से सदा जी चुराया करते हैं, अपनी नालायकी को दूसरों के ऊपर थोपकर झूठा आत्मसंतोष किया करते हैं।

बिलकुल गोल हथेली, जिसकी लंबाई और चौड़ाई बराबर हो, पराधीन, पराश्रित, दूसरों की कृपा पर जीवित रहने वालों की होती

है। मनोभावनाओं को दबाना, झिझकना, डरना और झूठ बोलना ऐसे लोगों की विशेषता होती है। पैसा होते हुए भी पैसे से मिलने वाले सुख उन्हें प्राप्त नहीं होते।

जिनकी हथेली इतनी लचकदार हो कि उँगलियों के अग्रभाग से मणिबंध (कलाई और हथेली के जोड़ की रेखा) का स्पर्श हो जाए, वे बहुत ही भाग्यवान और धनसंपन्न होते हैं। उँगलियों से कुछ बड़ी हथेली होनी चाहिए, किंतु जिनकी हथेली उँगलियों से छोटी हो उन्हें नेत्र रोग घेरे रहेंगे। पेट साफ न रहने की शिकायत भी बनी रहेगी।

उँगलियाँ

उँगलियों में फैले हुए ज्ञान-तंतु मस्तिष्क और नेत्रों के साथ शरीर के अन्य अंगों के तंतुओं की अपेक्षा विशेष संबंध रखते हैं। देखा जाता है कि जो लोग पंजा लड़ाने के शौक में व्यस्त होते हैं, उनकी दृष्टि और मानसिक शक्ति कमजोर पड़ जाती है। जब मस्तिष्क किसी विशेष कार्य में व्यस्त होता है, तो हाथों की उँगलियाँ अपने आप अनायास ही हिलने लगती हैं। जब काम न होते हुए भी उँगलियाँ काम कर रही हों, मनुष्य जमीन कुरेद रहा हो, उँगलियाँ हिला रहा हो, तब समझना चाहिए इसका मस्तिष्क इस समय किसी उलझन को सुलझाने में लगा हुआ है।

उँगलियों के बीच में दो गाँठें होती हैं। ऊपर की नाखून की तरफ की गाँठ बुद्धिविषयक लक्षणों को प्रकट करती है। दूसरी नीचे की हथेली की तरफ की गाँठ भौतिक वस्तुओं तथा स्वभाव को प्रकटीकरण करती हैं। जो गाँठ बड़ी हो उसी के अनुसार उसके स्वभाव को जाना जा सकता है। यदि ऊपर की गाँठ बड़ी हो, तो उस मनुष्य को विचारशील, दूरदर्शी, गुणवान्, कलाकार तथा आध्यात्मिक गुणों से युक्त कहा जा सकता है। यदि नीचे वाली गाँठ बड़ी हो, तो धनवान, ऐश्वर्यवान, सांसारिक वस्तुओं में रुचि

रखने वाला, भौतिक दृष्टिकोण वाला उसे समझा जा सकता है। यदि दोनों ही गाँठें बड़ी-बड़ी हों, तो उसे केवल एक कारागार कह सकते हैं। जिसकी दोनों गाँठें पतली और छोटी हों, तो उसे थोड़े में संतोष कर लेने वाला, भाग्यशाली कहा जा सकता है—ऐसे लोग प्रायः कोई बड़ी सफलता अपने जीवन में नहीं कर पाते।

मध्यमा उँगली की लंबाई से पूरी हथेली की लंबाई १।। गुनी होनी चाहिए। यदि उँगलियाँ इससे अधिक लंबी हों, तो उस मनुष्य को श्रद्धालु, ईश्वरभक्त, धर्मवीर, कल्पनाशील, तथा फूँक-फूँककर पाँव धरने वाला समझना चाहिए। उनकी उँगलियाँ साधारण अनुपात से छोटी होती हैं, वे अहंकारी, नास्तिक, चिड़चिड़े जल्दबाज होते हैं। मोटी-मोटी उँगलियों वालों के स्वभाव में उजड्डपन देखा जाता है, किंतु यदि वे कोमल और पतली हों, तो हँसमुख, खुशमिजाज तथा हास-परिहास पसंदगी का लक्षण समझना चाहिए।

अँगूठे की तरफ से गिनने पर पहली उँगली को तर्जनी दूसरी को मध्यमा, तीसरी को अनामिका, चौथी को कनिष्ठका, कहते हैं। इनके लक्षणों का विवेचन करते समय निम्न बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए—

(१) **तर्जनी**—तर्जनी को मध्यमा से एक अंगुल छोटा होना चाहिए। यदि इतनी लंबाई उसकी हो, तो औसत श्रेणी का स्वभाव होगा। यह लंबाई अधिक हो तो अभिमान, भोगविलासप्रिय, उच्चपद पाने की इच्छा, शासन-सत्ता में रुचि होने का चिह्न कहा जा सकता है। यदि यह लंबाई मध्यमा के बराबर हो, तो उसे उपद्रवी, निष्ठुर स्वभाव, आत्म-प्रशंसक माना जाएगा।

यदि तर्जनी मध्यमा की अपेक्षा एक अंगुल से अधिक छोटी हो, तो ऐसे मनुष्य शांत स्वभाव वाले होते हैं, परंतु कोई जिम्मेदारी का काम अपने कंधों पर लेने से या कोई साहसपूर्ण काम करने से बहुत डरते हैं। शरीरबल और बुद्धिबल की अपेक्षा मनोबल उनमें कम पाया जाता है। टेढ़ी-मेढ़ी और गाँठ-गठीली उँगलियाँ वाले प्रायः

उद्देश्यहीन एवं अनिश्चित विचार वाले होते हैं, दूसरों पर अपनी धाक जमाने में असफल रहते ही देखे जाते हैं।

(२) **मध्यमा**—यदि हथेली की लंबाई मध्यमा से १।८ गुनी हो, तो मध्यमा को औसत श्रेणी का ठीक समझ लेना चाहिए। यदि इस अनुपात से वह कुछ बड़ी हो, तो एकांतवास, उदासी और चित्तभ्रम का कारण बनेगी। अगर वह अधिक लंबी हो, तो निर्बल इच्छाशक्ति, अकर्मण्यता और अस्वस्थता की सूचक मानी जाएगी। जिसकी मध्यमा छोटी हो—अनामिका और मध्यमा बराबर हों, तो अशिष्ट व्यवहार, ओछे और गंदे विचारों की अधिकता रहेगी। ऐसे आदमी कभी-कभी जुआरी या सट्टेबाज भी देखे जाते हैं।

(३) **अनामिका**—तर्जनी की अपेक्षा अनामिका की लंबाई जितनी अधिक होगी, उतना ही जीवन अधिक सुखमय, भोग-ऐश्वर्यों से युक्त होगा। व्यापारिक कार्यों में उसे सफलता भी मिलेगी और मिलनसार स्वभाव का होगा। यश प्राप्त करने की इच्छा रहेगी और बहुत हद तक उसे प्राप्त भी करेगा। यदि उँगली तर्जनी के बराबर हो, तो ऐसे मनुष्य का जीवन औसत श्रेणी से अधिक ऊँचा न हो सकेगा। आदर्शवादी विचार करते हुए भी कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करने में उसे सफलता न मिलेगी। अगर अनामिका बहुत छोटी हो, तर्जनी से भी छोटी हो, तो ऐसा स्वभाव होगा कि जिसके कारण पग-पग पर विघ्न-बाधाएँ और हानियाँ उठानी पड़ा करेंगी।

(४) **कनिष्ठका**—अपने हाथ से कनिष्ठका की लंबाई चार अंगुल होनी चाहिए। यदि लंबाई इससे जरा भी अधिक हो, तो नेतृत्व, व्याख्यान शक्ति, प्रतिभा, विचारशीलता और तेजस्विता की निशानी समझनी चाहिए। यह लंबाई कुछ और ज्यादा हो, तो गंभीरता और दार्शनिकता की अधिकता रहेगी। किंतु यह उँगली चार अंगुल से छोटी हो, तो कम बोलना, चुप रहना, दूसरों द्वारा ठगा जाना, देर में समझ आना आदि कमजोरियाँ उस मनुष्य में देखी जावेंगी।

हथेली और चारों उँगलियों का जोड़ एक सीध में हो, तो भाग्यवान, धनवान और विद्वान होगा। तर्जनी का जोड़ अन्य उँगलियों की अपेक्षा कुछ नीचा-ऊँचा हो, तो दूसरों पर असर डालने की ताकत कम होगी। मध्यमा का जोड़ अव्यवस्थित हो, तो स्वभाव झगड़ालू होगा, शत्रुओं की अधिकता रहेगी। अनामिका का जोड़ ठीक जगह पर न हो, तो निंदा का पात्र बनना पड़ेगा। कनिष्ठका का जोड़ ठीक न होने से अधिक संकट का सामना करने के अवसर अधिक आते हैं।

हर एक उँगली तीन भागों में बँटी हुई है। उसका नाखून वाला ऊपर का छोर-आदर्श का ज्ञान, कला-कौशल और धार्मिक विचारों का प्रतीक है। बीच का भाग—ज्ञान का—निर्णय, विचार शक्ति और बुद्धिमता का प्रतीक है। नीचे का जड़ वाला भाग—प्रकृति का, लोक व्यवहार और कार्यकुशलता का प्रतीक है। जो भाग अधिक पुष्ट, बड़ा, कोमल, चिकना और भरा हुआ होगा उसकी शक्ति मनुष्य में अधिक पाई जाएगी, जो भाग कमजोर, सूखा, छोटा, कठोर होगा, उसकी शक्ति निर्बल एवं विकृत होगी। जितना बेडौल, भद्दा और कुरूप जो भाग होगा, उसी अनुपात से वहाँ की शक्ति भी उलटा फल देने वाली, हानिकारक एवं नष्ट-भ्रष्ट पाई जाएगी।

हाथ को बिलकुल ढीला छोड़ देने पर मालूम होता है कि उँगलियों का किसी विशेष ओर झुकाव है। कनिष्ठका, अनामिका और मध्यमा इन तीनों का झुकाव तर्जनी की तरफ हो और तर्जनी सीधी रहे, तो मनुष्य उत्साही, स्वतंत्र विचार वाला, बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाने वाला परिश्रमपूर्वक कार्य में जुटने वाला और विज्ञानी होगा। अगर अन्य उँगलियाँ का झुकाव भी कनिष्ठका की तरह हो, तो वह दुर्गुणों, दुस्वभावों और अनिष्टों का सूचक समझा जाएगा। तर्जनी यदि अँगूठे की तरफ झुकी हुई हो, तो बहुत ही

उत्तम अच्छे स्वभाव की द्योतक है। तर्जनी को छोड़कर अन्य तीनों उँगलियाँ यदि सीधी हों, तो मंद बुद्धि की सूचक है।

उँगलियों के बीच में फासला जितना अधिक होगा उतना ही मनुष्य दयालु, अनुभवी और सदाचारी होगा। तर्जनी और मध्यमा के बीच का अंतर विचारों की स्वतंत्रता का सूचक है। मध्यमा और अनामिका के बीच का अंतर स्वभाव की दृढ़ता का चिह्न है। अनामिका और कनिष्ठका के बीच का अंतर भोगों, इच्छाओं की अधिकता का प्रतीक है। यदि उँगलियाँ अधिक समीप हों, फासला कम हो, कुछ चिपक भी रही हों, तो उसे संशय वृत्ति और कुमार्ग की तरफ-झुकाव का चिह्न समझना चाहिए।

उँगलियाँ और हथेलियों की पीठ पर अधिक बाल होना रजोगुणी प्रकृति का चिह्न हैं। सतोगुणी लोगों के ये बाल थोड़े और मुलायम होते हैं, तामसिक वृत्ति के लोगों के हाथ पर घने, कड़े और बहुत काले बाल पाए जाते हैं। यदि बाल बिलकुल न हों तो, उस व्यक्ति में नपुंसकता और कायरता की प्रवृत्ति होगी।

अँगूठा

हाथ में अँगूठे का वही स्थान है, जो मुँह पर नाक का है। नाड़ी विशेषज्ञों का मत है कि मनुष्य के मस्तिष्क का अंगुल भाग की कार्य प्रंणाली के अनुसार जो विशेष प्रकार के कंपन्न होते हैं— ये मस्तिष्क से चलकर हाथ के अँगूठे पर ठहरते हैं और उस स्थान पर अपनी हलचलों का प्रभाव डालते हैं। जिससे अँगूठे की बनावट में भी अंतर आ जाता है। इन बनावटों को देखकर स्वभाव का पता लगाया जा सकता है।

सीधा और सुदृढ़ अँगूठा मनुष्य के दृढ़ निश्चयी, स्वच्छंद प्रकृति और निरंकुश स्वभाव का चिह्न है। कोमल झुके हुए अँगूठे वाले का चित्त चंचल और डाँवाडोल रहता है। दूसरों के बहकावे ऐसा मनुष्य आसानी से आ जाता है।

अँगूठे में दो जोड़ हैं। एक नाखून की जड़ में, दूसरा अँगूठे की जड़ में। अँगूठा जोड़ों पर से समान झुका हुआ नहीं होता, वरन् किसी एक जोड़ पर ही झुकाव अधिक होता है। यदि अँगूठे की जड़ वाले जोड़ पर ही झुकाव अधिक हो तो समझना चाहिए कि यह मनुष्य विचारवान, बुद्धिमान, परिस्थिति को समझकर काम करने वाला होगा। कम खर्च, रूखे स्वभाव का और अपने मतलब में चौकस रहेगा। यदि दूसरे जोड़ पर नाखून के पास वाली गाँठ पर से झुकाव हो, तो समझना चाहिए कि अधिक खर्च करने वाला, भावुक, दूसरों के लाभ के लिए स्वयं हानि सहने वाला, सीधा और छल-छिद्र से रहित होगा। अगर थोड़ा झुकाव हो तो समझना चाहिए कि आत्मविश्वास, विपत्ति में धैर्य तथा शत्रु से बदला लेने के भाव अधिक होंगे और झुकाव ज्यादा हो, तो समझना चाहिए कि डरपोकपन, चापलूसी एवं घबराहट की मात्रा अधिक रहेगी।

अँगूठे को ऊपर से लेकर नीचे की तरफ तीन भागों में बाँटा जा सकता है। अंतिम सिरा—पोरुआ—जहाँ मुर्दा नाखून बढ़ा करता है, इच्छाशक्ति का स्थान है। बीच का स्थान वह है, जहाँ बीच की गाँठ या मोड़ होती है, यहाँ से विचारशक्ति का पता लगाया जा सकता है। नीचे वाला अंतिम हिस्सा जिसे अँगूठे की जड़ या पहली गाँठ कहते हैं, प्रेम शक्ति की जगह है। इन तीनों स्थानों की कोमलता, स्वच्छता और सदृढ़ता को देखकर उस स्थान में रहने वाली शक्ति के बलवान होने का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। इनमें से जो जगह फटी हुई, सिकुड़ी, सूखी, दुर्बल, बेडौल और भद्दी हो, तो समझना चाहिए कि यहाँ रहने वाली शक्ति भी अस्त-व्यस्त, अल्प, निर्बल और विकृत होगी।

ऊपर का—पोरुआवाला इच्छाशक्ति का स्थान, मध्यभाग से बड़ा न होना चाहिए, अन्यथा झगड़ालू, बकवादी, क्रोधी, जिद्दी स्वभाव होगा। विचार शक्ति का प्रथम स्थान है। यदि किसी कार्य पर विचार करने के पश्चात् उसके करने का दृढ़ निश्चय किया है,

तो परिणाम अच्छा होता है, परंतु यदि बिना विचारे चाहे किसी बात पर अड़ जाने की आदत हो, तो वह ठीक नहीं समझी जाती। इसलिए अँगूठे का बीच का भाग मोटा, भारी और मजबूत होना अच्छा माना जाता है, आगे का हिस्सा उससे हलका होना चाहिए। अँगूठे की जड़ जहाँ प्रेम का स्थान है—सीधी और भरी हुई हो, तो समझना चाहिए कि यह स्थायी और मजबूत प्रेम करने वाला होगा। यदि जड़ ऊबड़-खाबड़, टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो ऐसे मनुष्य 'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा, स्वभाव के होंगे। आज गहरी दोस्ती है, तो कल गहरी दुश्मनी करते हुए उन्हें देर न लगेगी। जड़ की मोटाई साधारणतः बीच के भाग की अपेक्षा ड्योढ़ी हो, तो प्रेम की मात्रा उतनी ही समझनी चाहिए जितनी कि औसत दर्जे के आदमी में होनी चाहिए। यदि इससे न्यून या अधिक हो, तो उसी अनुपात से प्रेम भावना की कमीवेशी का अनुमान किया जा सकता है।

संक्षेप में यों कहा जा सकता है कि लंबे और समान आकार वाला अँगूठा बुद्धिमता और चतुरता का चिह्न है। छोटा-मोटा और बेडौल अँगूठा मूर्ख और क्रोधी होना प्रकट करता है। अधिक नुकीला हो, तो अस्थिरता, चंचलता एवं उथलेपन का सूचक है। इसी प्रकार पोरुआ मोटा हो, तो हठी और जिद्दी होना, बीच में पतला हो, तो स्वार्थी, रूखा, निष्ठुर प्रकृति का होना प्रकट होता है। जिसके पोरुवे बहुत मोटे, चौड़े, भारी और फटे-फटे से हों, वह मनुष्य बहुत ही भयंकर होता है, क्रोध में आकर वह पागल हो जाता है, तब उसे अर्थ-अनर्थ कुछ नहीं सूझता। अवसर पड़ने पर वह दूसरों को कत्ल कर सकता है और अपनी आत्महत्या के लिए भी तैयार हो सकता है।

अँगूठे की बनावट तथा ऊर्ध्व, मध्य और अधोभाग का ढाँचा, इन दोनों ही बातों पर विचार करने के पश्चात् किसी परिणाम पर पहुँचना चाहिए ?

नाखून

बनावट के अनुसार नाखूनों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—(१) लंबे, (२) छोटे, (३) चौड़े, (४) पतले।

लंबे नाखून वालों के फेफड़े कमजोर और सीने पतले पाए जाते हैं। शारीरिक दृष्टि से वे प्रायः निर्बल होते हैं। ऐसे नाखूनों में यदि धारियाँ पड़ी हुई हों तो आँतों की खराबी भी होगी, इस प्रकार के लोगों को निमोनिया, मोतीझिरा और मियादी बुखार की संभावना अधिक रहती है।

लंबे नाखून जिसमें नीलेपन की झलक होती है, रक्त की कमी और हृदय की अशुद्धता प्रकट करते हैं। नाखूनों की जड़ में अर्द्धचंद्राकार सफेद गोला-सा होना स्वस्थता की स्थिरता के लिए आवश्यक है। यदि वह न हो, तो नाड़ी-संस्थान और मानसिक रोगों की संभावना बनी रहती है। जिन लोगों का ऊपर का धड़ रोगी रहता है, उनके नाखून अपेक्षाकृत लंबे होते हैं।

बहुत छोटे नाखून वालों को कमर से नीचे के रोग अधिक देखे जाते हैं। जंघाओं में, गुप्तेंद्रियों में, पैरों में अक्सर उन्हें अस्वस्थता के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। यदि नाखून सीप, या कौड़ी की तरह छोटे, आकार के सिरे पर झुके हुए हों, चपटे या मांस में गहरे गढ़े हों, तो पक्षाघात आदि आकस्मिक रोगों की आशंका अधिक रहती है। नाखूनों के बीच-बीच में छोटे-छोटे सफेद दागों का पड़ना स्नायविक दुर्बलता का पूर्व लक्षण कहा जा सकता है।

साधारण से अधिक लंबे और अधिक छोटे नाखून शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थता के चिह्न हैं। परंतु इनके मानसिक फल अलग-अलग हैं। लंबे नाखूनों वाले व्यक्ति शिष्ट, विनम्र, कोमल स्वभाव के और समझदार होते हैं, परंतु उनमें कभी कभी कोई खास सनक या वहम भी देखा जाता है। लंबे नाखून यदि नीचे की

ओर मुड़ गए हों, तो कठोरता एवं बेरहमी उनमें पाई जाएगी। साधारणतः नाखूनों का रंग हलका गुलाबी होना चाहिए, परंतु वह रंग पीला हो, तो चिड़चिड़ेपन का लक्षण होगा, नीली झलक होना बालकों जैसे भोलेपन और श्रद्धा का चिह्न है।

छोटे नाखूनों वाले लोग बहुत तार्किक और संशयी स्वभाव के होते हैं। दूसरों की हँसी उड़ाने, चिढ़ाने या निंदा करने में उन्हें बड़ा मजा आता है। ऐसे आदमी, चटोरे, मतलबी, ढोंगी और बढ़-बढ़कर बात करने वाले, किंतु काम के वक्त मुँह छिपाने वाले पाए जाते हैं।

नाखूनों में दाग

नाखूनों पर सफेद दाग पड़ना स्नायविक दुर्बलता के साथ-साथ चिंता और मानसिक परिश्रम का भी लक्षण है। जो लोग मानसिक कार्य अपनी शारीरिक शक्ति से अधिक करते हैं, उनके नाखूनों पर भी सफेद तिल पड़ने लगते हैं। एक ज्योतिषी ने इनका फल इस प्रकार लिखा है—"अँगूठे में सफेद दाग हों, तो स्नेह-प्रेम, तर्जनी में हों, तो देशाटन; अनामिका में हों, तो सम्मान प्राप्ति और कनिष्ठका में हो तो आशाजनक भविष्य की प्राप्ति होती है। काला दाग किसी भी नाखून में होना अच्छा नहीं समझा जा सकता। चोट लगने से जो नीले दाग पड़ जाते हैं, उससे शुभ-अशुभ का कोई संबंध नहीं है।"

शंख-चक्र

हाथ की उँगलियों के अंतिम सिरे में नाखूनों से नीचे के भाग में शंख और चक्र की आकृतियाँ देखी जाती हैं। यदि दोनों हाथों में बीच की उँगली में शंख और अन्य उँगली-अँगूठा में चक्र हो, तो बहुत ही शुभ है; ऐसे लक्षणों वाले राज-ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं। इसकी अपेक्षा शंख जितने अधिक हों और चक्र जितने कम हों उसी अनुपात में से भाग्य निर्बल समझना चाहिए।

उँगलियों के अलावा हथेली के अन्य भागों में तथा उँगलियों के अन्य पोरुओं में भी शंख-चक्र पाए जाते हैं। इनकी संख्या को गिनकर फल का अनुमान किया जा सकता है। एक हाथ में शंखों के फल इस प्रकार हैं—एक हो तो अध्ययनशील, दो हों तो दरिद्र, तीन—स्त्री से दुखी, चार—राजा के समान सुखी, पाँच—विदेश से लाभ, छह—विद्वान, सात—दरिद्र, आठ—सुखी जीवन, नौ—नपुसंक, दस—राजा या योगी।

चक्रों का फल इस प्रकार है—एक—चतुर, दो—सुंदर, तीन—विलासी, चार—दरिद्री, पाँच—ज्ञानी, छह—चतुर, सात—वन्य प्रदेश में विहार करने वाला, आठ—दरिद्र, नौ—शासक, दस—सेवक।

तिल

काले और लाल दो प्रकार के तिल मनुष्यों के शरीर में देखे जाते हैं। लाल तिलों का होना बहुत ही शुभ और भाग्यवान होने का चिह्न समझा जाता है परंतु काले में यह बात नहीं है। काले तिल स्थान भेद से शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

यह भी देखा जाता है कि तिल जोड़ा से होता है। इनकी संख्या ऐसी होती है कि जिसे दो से विभाजित किया जा सके। एक स्थान पर तिल होगा, तो उसके जोड़ का दूसरा तिल भी किसी अंग पर जरूर दीख पड़ेगा। बहुत करके तो जोड़े का स्थान नियत भी होता है। जैसे एक तिल माथे पर दाहिनी ओर हो, तो उसका जोड़ा पेट या बाहु पर होगा। यह दांपत्य-जीवन के आनंदमय होने का लक्षण है। माथे पर बाँईं ओर हो तो भी पेट या भुजा पर तिल होगा, यह दांपत्य-जीवन में मनोमालिन्य का कारण होता है। जिनकी बाँईं भौं पर तिल होगा उनकी छाती पर भी बाँईं ओर जोड़ा हो जाएगा—ऐसे आदमियों को यात्राएँ बहुत करनी पड़ती हैं। दोनों भौं के बीच में तिल हो, तो बीच पेट में उसका जोड़ा मिलेगा, ऐसे

आदमी बकवादी और घमंडी देखे जाते हैं। नाक के तिल का जोड़ा नाभि के निकट है, यह प्रेम खुशमिजाजी तथा यार-बाश होने का द्योतक है।

कनपटी के तिल का जवाब कुच पर मिलता है। यह दाहिनी ओर होना शुभ और बाँई ओर होना अशुभ माना जाता है। कान की जड़ के आस-पास के तिल का जोड़ा पेट पर होता है—यह जिगर और आंतों के खराबी प्रकट करता है। नाक की नोंक का जोड़ा गुदा पर होगा—यह अल्पायु होने की निशानी है। गाल का जोड़ा कूल्हे पर मिलता है। यह दाएँ और बाएँ दोनों तरफ शुभ हैं। ऊपर के ओठ पर तिल का जोड़ा जंघाओं में देखा जाता है—यह कंजूसी का साइनबोर्ड समझा जा सकता है। नीचे के होंठ पर जो तिल होता है, उसका जवाब घुटने पर होगा—ऐसे आदमियों को विवाह-शादी के मामले बहुत दिलचस्पी होती है।

तर्जनी उँगली का तिल धनवान होने, अधिक शत्रु होने, झगड़ा-फसाद रहने का कारण होता है। मध्यमा का तिल सुख-शांति का देने वाला है; जिनकी अनामिका में होगा, वे यशस्वी, पराक्रमी धनवान और ज्ञानवान मिलेंगे। कनिष्ठका का तिल इस बात का प्रमाण है कि धन-संपत्ति होते हुए भी वह व्यक्ति सुखी न रह सकेगा। अँगूठे का तिल कार्यकुशलता और लोक-व्यवहार में प्रवीणता प्रकट करता है।

दाहिनी आँख में तिल होना बुद्धि की प्रखरता का चिह्न है। यह जितनी ही अधिक संख्या में हो उतने ही अच्छे हैं। बाँई आँख में तिल होना यह बताता है कि इस आदमी को अपना जीवन बड़े संघर्ष और कठिनाइयों के साथ व्यतीत करना पड़ेगा, वस्तुओं की कमी इसे न रहेगी, पर आराम की जिंदगी भी न काट सकेगा।

गरदन का तिल श्रद्धालु, ईश्वरभक्त और विनयी व्यक्तियों के होता है। ठुड्ढी का तिल कमजोरी-कायरता और जनानेपन का निशान है। पैरों के तिल मनुष्य को एक जगह बैठने नहीं देते, उसे यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ भागना पड़ता है।

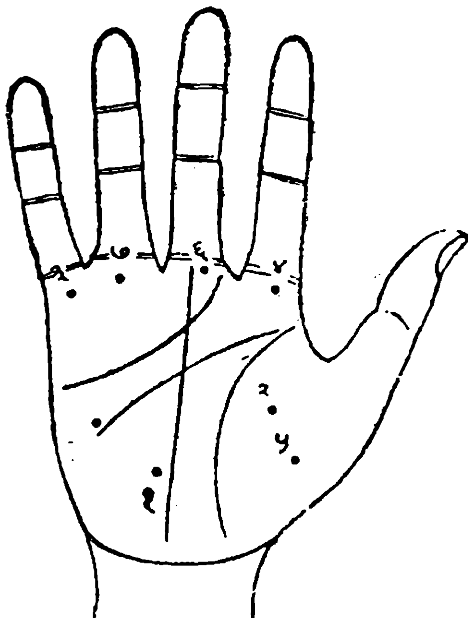
स्त्रियों की नाक पर तिल होना उनके सौभाग्य का चिह्न है। ऐसी स्त्रियाँ पति की ओर से असंतुष्ट नहीं रहती, जिनके बाएँ तरफ तिल ज्यादा हों, तो संतानों में पुत्र अधिक होते हैं, दाहिनी ओर तिल होने कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। गाल पर तिल होने से स्त्री की भावुकता और प्रणय-सुख की अभिलाषा विशेष मात्रा में पाई जाती है।

भुजाओं पर तिल वाले बहादुर, पेट पर तिल वाले चटोरे व छाती पर तिल वाले पराक्रमी, पीठ पर तिल वाले परिश्रमी, उन्नतिशील और चूतड़ पर तिलवाले उत्साहहीन, पराया आसरा तकने वाले होते हैं। गुप्त स्थानों के तिल कामुकता की मात्रा अधिक होना प्रकट करते हैं। बारह से कम संख्या में तिल होना शुभ है, इससे अधिक हों तो शारीरिक और मानसिक अवस्था के लक्षण समझने चाहिए। आमतौर से दाहिनी ओर के तिल बाँईं ओर की अपेक्षा शुभ और लाभदायक होते हैं।

ग्रह—विचार

हाथ में सात ग्रहों के स्थान नियत हैं, जिनके नाम पर सप्ताह के सात दिनों का नामकरण किया गया है। इनमें से छह ग्रहों का स्थान तो एक-एक है, परंतु मंगल के दो स्थान हैं—इन नियत स्थानों में से जो स्थान ऊँचा उठा हुआ हो, कुछ बढ़ा हुआ और कड़ाई-सा लिए हुए हों समझना चाहिए कि वह उसी ग्रह की शक्ति प्रधानता है। इस उठे हुए स्थान का फल उस ग्रह के स्वभाव के अनुकूल ही होता है।

हाथ में ग्रहों का स्थान



१—चंद्रमा
२—मंगल
३—बुध
४—बृहस्पति
५—शुक्र
६—शनि
७—सूर्य

पिछले पृष्ठ पर ग्रहों के स्थान बताए गए हैं। नीचे उसका कुछ विवरण दिया जा रहा है।

(१) **सूर्य**—अनामिका उँगली की जड़ से नीचे की तरफ का स्थान होता है। इसके ऊँचा होने से निम्न बातें मानी जा सकती हैं—उन्नति की तीव्र इच्छा, कला-प्रेम, चित्रकारी, कविता, साहित्य, सौंदर्य प्रेम, यश, तीर्थयात्रा, धर्मरुचि, विद्या, प्रतिष्ठा।

सुंदरता, शक्ति, संपत्ति, पितृ-सुख, आत्मिक स्थिति का परिचय भी सूर्य स्थान को देखकर किया जाता है।

(२) **चंद्र**—मणिबंध के पास चंद्र का स्थान है। इसे देखकर मातृ-सुख, मानसिक विचारधारा, स्त्री-सुख, धन-धान्य, प्रकृति-प्रेम, आदर्श, विचारमग्नता, राजा की प्रसन्नता का विचार किया जाता है।

(३) **मंगल**—मंगल के दो स्थान चित्र में दिए हुए हैं। इन स्थानों को देखकर बल, पराक्रम, पेट के रोग, रक्त विकार, स्वास्थ्य, मातृ-सुख, भूमि, पुत्र, कुटुंब की स्थिति को जाना जाता है।

(४) **बुध**—कनिष्ठका उँगली की जड़ में बुध का स्थान है, इसके द्वारा विद्या, बुद्धि, व्यापार, शिल्प, सौभाग्य, काव्य, देशाटन, विचारों की अस्थिरता व उथलापन, वाक् शक्ति विवेक तथा मित्रों का विचार किया जाता है।

(५) **वृहस्पति**—तर्जनी की जड़ में वृहस्पति का स्थान है, इसे देखकर मान-प्रतिष्ठा, धर्म, स्वाभिमान, उत्साह, न्यायप्रियता, भोग- विलास की इच्छा, बड़ा आदमी बनने की लालसा, बुद्धि, विद्या तथा विवेकशीलता का परिचय प्राप्त होता है।

(६) **शुक्र**—शुक्र का स्थान अँगूठे की जड़ से लेकर मणिबंध तक है। इससे स्त्री-सुख, विवाह, स्नेह, सौंदर्य, प्रतिभा, प्रताप, मनोरंजन, सवारी, आभूषण, काम-वासना का आभास मिलता है।

(७) **शनि**—मध्यमा उँगली की जड़ में शनि का स्थान है। यह क्लेश, दुःख, पीड़ा, व्यसन, जुआ, असफलता, मौन, एकांतवास,

उदासी, निराशा तथा दुर्भावों को प्रकट करती है। वैराग्य, संन्यास, किंकर्तव्यविमूढ़ता का भी इसी स्थान को देखकर पता लगाया जा सकता है।

यदि नियत स्थान अच्छी तरह उभरे हुए हों, तो ग्रह का नियत फल भले रूप में समझना चाहिए। यदि कोई उठाव न हो, तो फल का प्रश्न ही नहीं उठता। गड्ढा, बहुत ऊँचा उठाव, टेढ़ा-मेढ़ापन, गाँठ या इसी प्रकार की कोई बेडौल स्थिति नियत स्थान पर हो, तो जो बातें ग्रह से जानी जाती हैं वे सभी बातें विकृत और बुरा परिणाम उपस्थित करने वाली समझनी चाहिए।

हाथ की प्रमुख रेखाएँ

हाथ की प्रमुख रेखाएँ अग्र पृष्ठ पर चित्र में देखा जा सकता है—

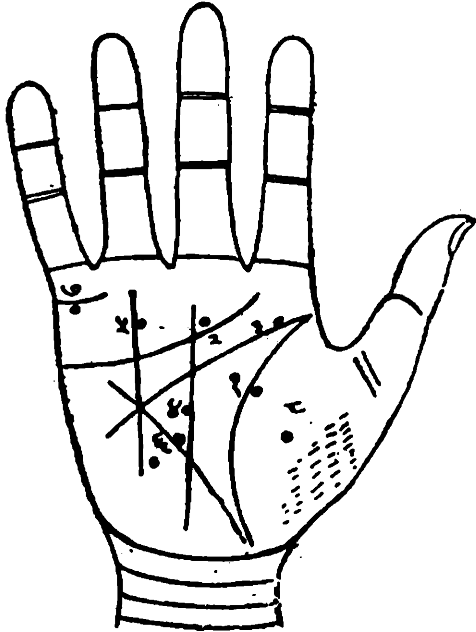
(१) **जीवन रेखा**—इसे पितृ रेखा, आयु रेखा, गोत्र रेखा, कुल रेखा, लाइफ लाइन भी कहते हैं। तर्जनी और अँगूठे के बीच से चलकर शुक्र के स्थान को घेरती है, इससे आयु का विचार किया जाता है।

(२) **मस्तक रेखा**—इसे धन रेखा, मातृ रेखा, हेडलाइन भी कहते हैं। हथेली के मध्य भाग में होती है। बुद्धिबल का इससे पता चलता है।

(३) **हृदय रेखा**—इसे अंतःकरण रेखा और हार्ट लाइन भी कहते हैं। मस्तक रेखा के ऊपर समानांतर में होती है। इससे मनुष्य का दृष्टिकोण, उद्‌देश्य, लक्ष्य और विश्वास का परिचय मिलता है।

(४) **भाग्य रेखा**—इसे ऊर्ध्व रेखा या फेट लाइन भी कहते हैं। हाथ के मध्य भाग में होकर शनि के स्थान को स्पर्श करती है। इससे प्रारब्ध का ज्ञान होता है।

हाथ की रेखाओं का परिचय



(१)—जीवन रेखा
(२)—मस्तक रेखा
(३)—हृदय रेखा
(४)—भाग्य रेखा
(५)—सूर्य रेखा
(६)—आरोग्य रेखा
(७)—विवाह रेखा
(८)—संतान रेखा
(९)—मणिबंध रेखा

(५) **सूर्य रेखा**—इसे विद्या की रेखा या लाइन ऑफ सन भी कहते हैं। हथेली की जड़ में से चलकर अनमिका उँगली की तरफ जाती है। इससे विद्या, यश और प्रतिभा की जानकारी होती है।

(६) **स्वास्थ्य रेखा**—इसे आरोग्य रेखा या हेल्थ लाइन भी कहते हैं। बुध के स्थान से हथेली की जड़ की तरफ तिरछी जाती है। इससे स्वास्थ्य का विचार किया जाता है।

(७) **विवाह रेखा**—इसे अंग्रेजी में लाइन ऑफ मैरिज कहते हैं। यह बुद्ध की उँगली से नीचे हृदय रेखा की बराबर होती है। इससे स्त्री-सुख के संबंध में ज्ञान होता है।

(८) **संतान रेखा**—अँगूठे की जेड़ और कलाई के बीच में हथेली पर आरंभिक भाग में छोटी-छोटी रेखाएँ हैं, उसको संतान रेखा कहते हैं।

(९) **मणिबंध रेखा**—इसे ब्रेसलेटिन भी कहते हैं। ये तीन रेखाएँ तिहाई में होती हैं।

इसके अतिरिक्त शुक्र मुद्रिका, चंद्ररेखा, मंगलरेखा, बांधव रेखा, प्रवास रेखा आदि अनेक छोटी-छोटी रेखाएँ पाई जाती हैं। वे इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। ऐसी रेखाओं का वर्णन इस छोटी पुस्तक में हो भी नहीं सकता, इसलिए उनका समावेश यहाँ नहीं किया जा रहा है।

रेखाएँ सीधी और स्पष्ट होनी शुभ है। जंजीरदार, लहरदार या बहुत गहरी हों, तो उन्हें दोषपूर्ण समझना चाहिए। जिन मनुष्यों के हाथ में रेखाएँ बहुत ही थोडी हों, तो वह दरिद्री और दुखी होगा। छोटी-छोटी रेखाएँ एक-दूसरे को काटती हुई जाली-सी बुनें, तो शरीर की कमजोरी खासकर नाड़ियों की निर्बलता समझनी चाहिए। ऐसे लोग थोड़े परिश्रम से थक जाते हैं। पल्लवदार रेखाएँ—क्लेशदायक; टूटी-फूटी रेखाएँ—अल्पजीवन; कहीं मोटी,

कहीं पतली रेखाएँ होना क्लेशकारक है। टेढ़ी रेखाएँ दरिद्रता की निशानी हैं। चिंता और शोक में डूबे रहने वालों की रेखाएँ पीली पड़ जाती हैं। उग्र, कडुआ और क्रोधी स्वभाव हो, तो रेखाएँ लाल पड़ जावेंगी। पीलापन खून की कमी का और कालिमा कठोर स्वभाव का चिह्न है। दोहरी या शाखायुक्त रेखाएँ अधिक फलदायक होती हैं। हृदय रेखा से ऊपर जाने वाली रेखाएँ शुभ और नीचे जाने वाली अशुभ समझी जाती हैं।

रेखाओं के फल

जीवनरेखा—साधारणतः यह रेखा वृहस्पति के स्थान से कुछ नीचे ही आरंभ हो जाती है, परंतु यदि ठीक वृहस्पति के स्थान से आरंभ हो, तो दीर्घजीवन, उच्च अभिलाषा और आशावाद का चिह्न है। शुक्र के स्थान को घेरती हुई मणिबंध की रेखा तक चली गई हो, तो १०० वर्ष के करीब आयु कही जा सकती है। बीच-बीच में रुक गई हो या बिगड़ गई हो तो यह बार-बार बीमार पड़ने की निशानी है। जितनी बार टूटी हो उतनी ही बार भयानक रोग या जीवन-संकट का मुकाबला करना पड़ेगा। जीवन रेखा का लंबा, साफ और स्पष्ट होना नीरोगता और बड़ी आयु का सूचक है। यह छोटी होती है, तो मनुष्य अल्प आयु ही भोगने पाता है।

जब दो जीवन रेखाएँ बराबर चलती हैं, तो भीतर वाली को मंगल रेखा कहते हैं, जो अपत्तियों से बचाव, धनप्राप्ति, बहादुरी, सच्चरित्रता की निशानी है। जीवन रेखा अँगूठे की जड़ से आरंभ हो, तो संतान की ओर से दुःख का सूचक है।

इस रेखा को तीन हिस्सों में बाँटकर बालकपन, युवावस्था और वृद्धावस्था के शरीर-सुख के बारे में जाना जा सकता है। जो तिहाई मजबूत, स्पष्ट और साफ हो, आयु की वह तिहाई अच्छी बीतती है। जो टुकड़ा टूटा-फूटा या पतला हो, तो समझना चाहिए

कि जीवन का वह भाग शारीरिक दृष्टि से कष्ट के साथ बीतेगा। जड़ में बालकपन, बीच में युवावस्था और अंत भाग से वृद्धावस्था का विचार करना चाहिए। केवल जीवन रेखा ही नहीं, अन्य रेखाओं को भी इसी प्रकार तीन भागों में बाँटकर उस रेखा का फल किस आयु में क्या होगा ? यह जाना जा सकता है।

गुरु, शनि या मंगल के स्थान ऊँचे उठ रहे हों और उन स्थानों को जीवन रेखा आच्छादित कर रही हो, तो यह अस्वस्थता का चिह्न है। चंद्र स्थान की ओर जाती हो, तो व्यसन और बेचैनी की अधिकता रहती है। सूर्य स्थान की ओर जा रही हो तो धनी, इज्जत वाला और राजदरबार में प्रतिष्ठित होता है। जिनकी यह रेखा बुध स्थान की ओर झुकती है। आमतौर से व्यापार में अपना जीवन लगाते हैं। कोई शाखा फूटकर यदि शुक्र स्थान की ओर चले, तो ऐसे मनुष्यों को आज यहाँ तो कल वहाँ रहना पड़ता है।

जिसके हाथ में जीवन रेखा बिलकुल न हो, उसकी मृत्यु अस्वाभाविक तरीके से होती है। यह रेखा यदि किसी अन्य रेखा से मिली हो, तो उस रेखा का फल जीवन में विशेष रूप से देखा जाता है। यह नियम प्रायः सभी रेखाओं के बारे में जो-जो रेखाएँ आपस में मिली हों, उनका सम्मिलित फल अवश्य दृष्टिगोचर होता है। किस उम्र में वह फल मिलेगा ? इसका निर्णय तीन भागों में बाँटकर बालकपन यौवन और वृद्धावस्था का निर्णय किया जा सकता है।

रेखा के बीच में गोल चिह्न को द्वीप कहते हैं। यह जीवन रेखा में या अन्य रेखाओं में विघ्न उपस्थित करते हैं, जो रेखा जिस रेखा को काट देती है, उसका फल अशुभ होता है। जैसे— धन रेखा, विवाह रेखा को काटती हो, तो दांपत्य जीवन में पैसे का अभाव सदा ही खटकता रहेगा। परंतु विवाह रेखा

धन रेखा में मिले, तो पत्नी के आगमन के साथ धन का आगमन भी होता है। कोई रेखा जड़ में ही अधिक पुष्ट हो, तो समझना चाहिए कि यह गुण या वस्तु इसे पैतृक रूप में बिना परिश्रम के ही अधिक मात्रा में मिल जाएगी। जीवन रेखा यदि किसी प्रकार रुके, तो 'हार्टफेल' आदि आकस्मिक कारणों से मृत्यु होना प्रकट होता है।

मस्तक रेखा—मस्तक रेखा चंद्र व मंगल के उठे हुए स्थानों को आच्छादित करती हो, तो तीव्र बुद्धि, विवेक, स्पष्ट विचार प्रकट होते हैं। केवल चंद्र स्थान को छूती हुई नीचे की ओर झुके, तो स्मरण शक्ति की कमी बताती है। बीच-बीच में टूटती-फूटती पूरी हथेली को पार करे, तो चालाकी, कूटनीति, धूर्तता और ठगी की अधिकता होती है। इसका अंतिम सिरा यदि कलाई की ओर झुका हो, तो व्यवहारकुशलता, हाजिर जवाबी, मौकापरस्ती और बढ़ी हुई मानसिक शक्ति का ज्ञान कराती है।

जीवन रेखा और मस्तक रेखा में जितना ही फासला होगा मनुष्य उतना ही साहसी, उग्र कर्म करने वाला, वैरागी, निर्भीक, जिंदगी की या हानि-लाभ की परवाह न करने वाला होगा। दोहरी मस्तक रेखा हो, तो असाधारण दूनी बुद्धिमत्ता का लक्षण है। ये शाखाएँ निकलकर सूर्य के स्थान की ओर जाएँ, तो प्रभावशाली विचारों का होना और बुध के स्थान की ओर जाएँ, तो शास्त्रज्ञ होना प्रकट होता है।

लहरदार मस्तक रेखा वाले आधे पागल होते हैं। जंजीरदार रेखा वाले घर में सदा कलह मचाए रहते हैं। बहुत-सी छोटी-छोटी लाइनों से वह कट रही हो तो कई प्रकार के मानसिक रोग देखने में आते हैं। यदि बहुत-सी छोटी-छोटी शाखाएँ निकलकर हृदय रेखा की ओर जा रही हों, तो ऐसे व्यक्ति धुन के पक्के और स्वभाव के मीठे मिलेंगे।

हृदय रेखा—हृदय रेखा से प्रेम, प्रसन्नता और आदर्श का ज्ञान होता है। यह रेखा बीच में फटी-टूटी हो, तो मतलब की मुहब्बत, जरा-सी बात में रंज और जरा-सी बात में खुशी, मौका पड़ते ही धर्म को भूल जाना—यह दुर्गुण देखे जाएँगे। उँगलियों से इस रेखा में जितना ही फासला होगा, उतनी ही सच्चाई, स्थिरता और वफादारी पाई जाएगी। गुरु के स्थान के निकट यदि इसमें दो शाखाएँ फूटें, तो वह साधु, दयालु, परोपकारी और लोकसेवक मनुष्य होगा। वृद्ध पुरुषों और देवताओं की भक्ति करने वालों के हाथ में हृदय रेखा गुरु स्थान की सीध में पहुँचकर कुछ अधिक मोटी हो जाती है। तर्जनी और मध्यमा के बीच भाग में यह रेखा मिलती हो, तो व्यभिचार की ओर झुकाव अधिक रहता है। यदि तर्जनी के नीचे यह रेखा समाप्त होती हो, तो अपने मित्र से बार-बार निराशा होती है, प्रेमी और आत्मीय कहलाने वाले लोग समय पर अक्सर उसे धोखा दे जाते हैं।

भाग्य रेखा—पूर्व संचित शुभ कर्मों के कारण क्या-क्या सुख इस जीवन से मिलने वाले हैं ? इसका पता भाग्य रेखा के द्वारा बताया जा सकता है। यदि यह रेखा बीच में टूटी हुई न हो तो उत्तम फल देने वाली है। ऐसे व्यक्तियों को धन, ज्ञान, स्वास्थ्य, प्रतिभा और प्रेम की कमी नहीं रहती। जिनके हाथ में यह रेखा बिलकुल न हो, वे प्रायः निर्धन और दुखी-दरिद्री रहते हैं। मणिबंध से चलकर शनि के स्थान तक पहुँचने वाली भाग्य रेखा बुद्धिमत्ता, समृद्धि और सुख-सौभाग्य का होना प्रकट करती है। इसका अंतिम सिरा ऊपर की ओर झुका हुआ हो, तो ऐसा व्यक्ति सदा सुखी रहेगा। किसी अवसर पर इसे मन मारकर बैठना न पड़ेगा। समय पड़ने पर आवश्यक वस्तुएँ अनायास ही उसके पास आ जाएँगी। जिसका अंतिम सिरा नीचे की ओर मुड़ गया हो, वह धनवान होते

हुए भी आपत्तियों में फँसा रहता है। आए दिन कोई-न-कोई झंझट उसके सामने खड़े रहते हैं।

यदि भाग्य रेखा अनामिका की जड़ की ओर जा रही हो, तो बहुत-से लोगों के सहयोग से सुखी हो सकता है, पर अकेला कुछ बड़ा काम करने में समर्थ नहीं हो सकता। यदि यह रेखा कनिष्ठका के मूल की तरफ जा रही हो, तो परदेश में पुजता है और धन-लाभ करता है। भाग्य रेखा शुक्र के स्थान से निकलती हो, तो दूसरों के ऊपर उसका भाग्य आश्रित रहता है। पैतृक या अनायास धन की प्राप्ति होती है, किंतु दूसरों के प्रभाव में उसे रहना पड़ता है।

यदि भाग्य रेखा शनि के स्थान पर पहुँचकर वृहस्पति के स्थान की ओर मुड़ जाएँ, तो वृद्धावस्था में अधिक उन्नति होती है। यदि मूल में मस्तक रेखा और भाग्य रेखा जुड़ी हुई हो, तो समझना चाहिए कि बौद्धिक कार्यों में सुख मिलेगा। यदि वह नीचे जाकर दो भागों में बँट गई हो, तो देशाटन में विशेष रुचि प्रकट करती है।

सूर्यरेखा—यह रेखा मूर्ख, अशिक्षित, भाग्यहीन, निर्धन बदनाम तथा तुच्छ पुरुषों के हाथों में भी होती है। जिसके हाथ में होती है, वह निश्चय ही बड़ा भाग्यशाली और प्रतिभाशाली होता है। भाग्य रेखा यदि हाथ में न हो, तो सूर्य रेखा, धन रेखा का काम करती है।

यदि सूर्य रेखा की जड़ जीवन रेखा से मिली हो, तो वह मनुष्य कोई बड़ा कलाकार होता है। चंद्र स्थान से निकले, तो दूसरों की सहायता से उन्नति करने वाला और यशस्वी होता है। मंगल के स्थान से निकले, तो अनेक विघ्न-बाधा और संघर्षों से लड़ने के बाद उसे सफलता प्राप्त होती है। हृदय रेखा से निकले, तो अनेक गुणों की विशेषता और वृद्धावस्था में यशस्वी

होने का चिह्न है। दो सूर्य रेखाएँ हो, तो अचानक यश और धन में वृद्धि होती है। यदि मस्तष्क रेखा से निकली हो, तो युवावस्था में दिमागी शक्ति द्वारा कोई बड़ा सफलता मिलती है। मणिबंध के पास से निकले, तो वह आदमी ऐसा भाग्यशाली होता है कि मिट्टी पकड़े तो सोना बन जाए। यदि जीवन रेखा के भीतर से निकले, तो प्रेम के द्वारा धन, यश या पद की प्राप्ति होती है। भाग्य रेखा से निकलती हो, तो अपने प्रयत्न से ही उसका उत्थान होता है।

यदि सूर्य रेखा का अंत में त्रिशूल की तरह तीन रेखाओं वाली हो जाए तो उसकी शक्ति कई तरफ बँट जाती है, इसलिए किसी एक कार्य में अधिक सफलता प्राप्त नहीं होती। सूर्य रेखा जिस ग्रह के स्थान पर जाकर समाप्त होती हो, उसी ग्रह के गुणों को बलवान बनाती है; जैसे बुध के स्थान पर समाप्त हो, तो व्यापार, विज्ञान, साहित्य, यश और सार्वजनिक जीवन में सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार गुरु या शनि के स्थान का फल समझना चाहिए।

स्वास्थ्य रेखा—स्वास्थ्य रेखा का जीवन रेखा से न मिलना, शरीर की दृढ़ता, दीर्घायु और बलवान होने का चिह्न है। यदि मिली हुई हो, तो आएदिन कुछ-न-कुछ शारीरिक कष्ट खड़ा रहता है। सामुद्रिक विद्या के पारंगत पंडित शेरो ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि स्वास्थ्य रेखा तंदुरुस्ती का थर्मामीटर है। जिन दिनों मनुष्य बीमारी में ग्रस्त होता है या बीमार पड़ने को होता है, उस समय यह रेखा गहरी और भयानक हो जाती है, पर जब शरीर स्वस्थ होने लगता है, यह रेखा धुँधली पड़ जाती है। इसमें से जितनी शाखाएँ फूटती हों उतने ही किस्म के रोगों का अधिक दबाव रहता है।

यह रेखा चंद्र स्थान तक चली जाए, तो मनोविकारों की अधिकता और वीर्य संबंधी रोगों का अस्तित्व प्रकट होता है। स्वास्थ्य रेखा हर किसी के हाथ में हो यह आवश्यक नहीं है। सच तो यह है कि इसका न होना ही होने की अपेक्षा ज्यादा अच्छा है। जिसके हाथ में यह नहीं होती, वे उतने बीमार नहीं पड़ते। इसका दोहरा होना चरित्र की पवित्रता और अच्छे स्वास्थ्य का चिह्न है। पीले रंग की हो, तो कलेजे की बीमारी का होना बताती है। स्वास्थ्य रेखा मस्तक रेखा से मिलती हो, तो जीवनी-शक्ति का अभाव प्रकट होता है। ऐसे आदमी थोड़े परिश्रम से बहुत थक जाते हैं। यदि यह मस्तक रेखा और हृदय रेखा के बीच में होकर निकली हो और अधिक लालिमा युक्त हो, तो मूर्च्छा, मृगी, पागलपन, सनक आदि मानसिक रोगों की निशानी है।

विवाह रेखा—कनिष्ठका उँगली और हृदय रेखा के बीच में जो छोटी किंतु गहरी रेखा बुद्ध के स्थान की तरफ आती है, वह विवाह रेखा कहलाती है। इसी के द्वारा स्थायी विवाह का परिचय प्राप्त होता है, इसमें से जो शाखाएँ निकलती हैं ? वे उप-पत्नियों की अधूरे विवाहों की सूचना मिलती है। विवाह रेखा जितनी गहरी और बिना टूट-फूट की होती है—स्त्री से प्रेम भी उतना ही अच्छा निभता है। बीच में उथलापन या टूटना प्रेम मार्ग को हलका, ओछा और विघ्नयुक्त बनाता है। यदि रेखा बीच में स्पष्ट रूप से बिलकुल टूट गई हो, तो पत्नी से संबंध विच्छेद या मृत्यु की सूचना है। कई जगह यदि टूट गई हो, तो ऐसे ही कटु अवसर कई बार आ सकते हैं।

यदि यह सूर्य रेखा से मिलती हो, तो धनी घर से विवाह होना बताती है, किंतु यदि उसे काटकर आगे बढ़ जाए, तो विवाह के बारे में किए गए बड़े-बड़े मनसूबे धूल में मिल जाते हैं। विवाह रेखा में से कोई रेखा निकलकर हृदय रेखा तक

पहुँचे, तो रोगी पत्नी के साथ विवाह होता है। मंगल के स्थान से निकलकर कोई छोटी पतली रेखा विवाह रेखा में जा मिले, तो विवाह के फलस्वरूप रोज-रोज झगड़े का और क्लेश का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही कोई पतली-सी रेखा शुक्र के स्थान से निकलकर विवाह रेखा में आ मिले, तो पत्नी परेशानी की जड़ बन जाती है। साँप-छछूंदर की गति में उसे सदा उलझा रहना पड़ता है। जीवन रेखा और विवाह रेखा में फासला अधिक हो, तो पति-पत्नी में सदा मतभेद बना रहता है। सूर्य स्थान से चलकर कोई पतली रेखा विवाह रेखा में मिले, तो सब प्रकार सुख, शांति और संतोष होने का लक्षण है।

विवाह रेखा और हृदय रेखा के बीच के फासले से शादी की उम्र जानी जा सकती है। यदि बहुत समीपता हो, तो बालकपन में ही विवाह हो जाता है—यह फासला जितना ही अधिक होता जाता है, विवाह की आयु में उतनी ही देरी समझनी चाहिए। साधू-महात्माओं के हाथ में विवाह रेखा स्त्री की सूचना नहीं देती वरन् भक्त और शिष्यों के संबंध में ज्ञान कराती है। यह फाँकदार हो तो स्त्री-पुरुषों के मनों में फाँक रहना प्रकट होता है।

मणिबंध—हाथ को नीचे की ओर झुकाने से कलाई पर जहाँ नाड़ी देखी जाती है, उस जगह कुछ सिलवटें-सी पड़ती हैं, इनको मणिबंध या कलाई की रेखाएँ कहते हैं। अक्सर ये तीन होती हैं। इनसे पहली से तंदुरुस्ती, दूसरी से धन और तीसरी से सुख-शांति जानी जाती है। किंतु भारतीय सामुद्रिक विद्या के अनुसार इनमें से पहली से धन, दूसरी से विद्या और तीसरी से प्रेमभाव और सत्स्वभाव का पता चलता है।

इन रेखाओं से आयु का अनुमान भी लगाया जाता है। हर एक रेखा से ३० वर्ष की आयु का अंदाज है। अगर तीन रेखाएँ

साफ हों, तो ६० वर्ष की आयु भी कम होती है। इनमें जितनी कमी है, उतनी आयु भी कम होती है जैसे किसी के मणिबंध में १।। रेखा हो, तो उसकी आयु लगभग ४५ वर्ष होगी।

संतान रेखाएँ—अँगूठे की जड़ें और कलाई के बीच में हथेली पर आरंभिक भाग में जो छोटी-छोटी रेखाएँ हैं, उनसे संतान के संबंध में पता चलता है। ये रेखाएँ जितनी हों उतनी संख्या में संतान होंगी। जो रेखाएँ हथेली की ओर से आरंभ होकर पृष्ठ भाग की ओर बढ़ रही रही हों, वे पुत्र की सूचक हैं। जो पृष्ठ भाग की ओर से आरंभ होकर हथेली की तरफ चल रही हों, वे कन्याओं की संख्या बताती है। बीच-बीच में जो बहुत पतली और खंडित रेखाएँ होती हैं, वे गर्भपात या बालकों की अल्पायु में ही मृत्यु की सूचना देती हैं, जितनी रेखाएँ गहरी स्पष्ट और लंबी हों, उतनी ही संतानों का निश्चय करना चाहिए। इनमें से जितनी कटी-फँसी नहीं वे संतान सुख देती हैं, जितनी रेखाएँ कटी-टूटी या फाँकदार हों, वे संतान प्रायः जी को जलाने वाली, विरोधी और कष्टदायी होती है।

कुछ अन्य चिह्न

कोण	त्रिभुज	गुणक	जाल
दाग	नक्षत्र	द्वीप	समकोण

हाथ में कई प्रकार के अन्य चिह्न भी देखे जाते हैं। इनमें से आठ प्रमुख चिह्न हैं—(१) दाग (२) नक्षत्र (३) द्वीप (४) समकोण (५) कोण (६) त्रिभुज (७) गुणक (८) जाल। चिह्न की तसवीरें चित्र में दी हुई हैं। उसके आधार पर पाठक इन चिह्नों की आकृति समझ सकते हैं।

इन चिह्नों में नक्षत्र, द्वीप, समकोण, कोण और त्रिभुज—ये पाँच शुभ हैं। दाग, गुणक और जाल—ये तीन अशुभ हैं। जो चिह्न जिस रेखा के समीप हों या बीच में हों, वह उसी रेखा के फल को भला या बुरा बनावेगा। अशुभ चिह्न उसी रेखा के फल में बुराई पैदा करेंगे, जिसके समीप होंगे। इसी प्रकार शुभ चिह्न भी अपना फल दिखाएँगे।

यदि उपरोक्त चिह्नों में से कोई चिह्न किसी ग्रह के स्थान पर हो तो उस ग्रह के फल पर भी उस चिह्न का प्रभाव पड़ेगा। बुरा चिह्न उस ग्रह के फल में अपनी बुराई का भी देगा, इसी प्रकार शुभ चिह्न उस ग्रह के अशुभ फल में सुधार और शुभ फल में वृद्धि करेगा।

सप्त वर्षीय नियम

इस संसार की हर चीज गोल है और हर वस्तु अपनी धुरी पर घूमती है। फलस्वरूप प्रत्येक बात की पुनरावृत्ति हुआ करती है। सूर्य हर चौबीस घंटे बाद नित्य उदय होता है और हर चौबीस घंटे बाद ही नित्य अस्त होता है। ऋतुएँ एक साल बाद फिर वापस आती हैं। समस्त ग्रह-नक्षत्र अपने नियत क्रम पर घूमते हुए अपनी परिक्रमा पूरी किया करते हैं। इसी विधान के अनुसार जीवन का एक चक्र सात वर्ष में पूरा हो जाता है। जो सुख-दुख, हानि-लाभ, जीवन के पहले वर्ष में हुए थे, उसी से मिलते-जुलते १, ७, १४, २१, २८, ३५, ४२, ४९, ५६, ६३, ७० आदि वर्षों में होते जाएँगे। जो हानि, लाभ, सुख-दुःख जीवन के दूसरे वर्ष में हुए थे वैसे ही २, ८, १५,

२२, २६, ३६, ४३, ५०, ५७, ६४, ७१, ७६ आदि वर्षों में होंगे। इसी प्रकार सातवाँ वर्ष वैसा ही आ जाता है, जो पहला था। किन्हीं ७ वर्षों का वर्षफल ध्यानपूर्वक तैयार कर लिया जाए, तो जीवन भर का साधारण वर्षफल बन जाता है। हाँ विशेष कारणवश उसमें विशेष न्यूनाधिकता हो जाना दूसरी बात है।

हाथ में उपस्थित रेखाओं के शुभाशुभ फल में भी वह सप्तवर्षीय नियम काम करता है। उसकी रीति यह है कि जिस रेखा के संबंध में जानकारी प्राप्त करनी हो, उसकी संभावित पूरी लंबाई नाप लेनी चाहिए। मान लीजिए कि हाथ की बनावट के अनुसार किसी की भाग्य रेखा यदि पूरी बनी होती, तो संभवतः ४ इंच होने की संभावना थी। अब इसे एक कागज पर नोट कर लीजिए और १०० वर्ष आयु से इसका अनुपात निर्धारित कर लीजिए। जैसे—

४ इंच = १०० वर्ष

अब देखिए कि हाथ में भाग्य रेखा की लंबाई कितनी है ? यदि वह तीन इंच हो, तो उसका हिसाब इस प्रकार लगाना चाहिए कि यदि ४ इंच भाग्य रेखा हो, तो १०० वर्ष तक फल देती। किंतु वह तीन इंच है तो ७५ वर्ष तक ही फ़ल देगी—इसका अर्थ यह न समझना चाहिए कि इतने वर्ष की आयु में मृत्यु हो जाएगी, वरन् यह है कि यदि जीवन कायम रहे, तो ७५ वर्ष तक फल देगी, इसके बाद निष्फल हो जाएगी। इसी प्रकार यदि कोई रेखा पूरी संभावना की अपेक्षा चौथाई ही हो, तो इसका फल २५ वर्ष रहेगा, इसके उपरांत यह रेखा निरर्थक हो जाएगी।

जीवन के आदि, मध्य या अंत में रेखा का फल क्या रहेगा ? यह जानने के लिए यह देखना चाहिए कि रेखा किस भाग में स्पष्ट है ? किस भाग में टूटी है ? किस भाग में धुँधली है और किस भाग में बिलकुल धुँधली नहीं ? रेखा को ४ भागों

में बाँटकर हर एक २५-२५ वर्ष वाले भाग का अनुमान कर सकते हैं। जैसे कोई रेखा आदि के एक चौथाई भाग में बिलकुल न हो और अंत में भी न हो, सिर्फ बीच-ही-बीच में हो, तो इसका तात्पर्य यह है कि बालकपन और वृद्धावस्था के २५ वर्षों वह रेखा फल न देगी, वरन् २५ वर्ष की आयु से लेकर ७५ वर्ष तक के बीच के ५० वर्षों में ही उसका फल रहेगा। बीच में या आदि, मध्य में यदि कोई रेखा पतली, धुँधली, टूटी हुई हो, तो उस समय में उसका फल भी उसी अनुपात में कम होता है। जिस स्थान पर कोई रेखा अधिक मोटी या दोहरी हो गई हो, तो उस स्थान की लंबाई नापकर उपरोक्त प्रकार से हिसाब लगाकर जाना जा सकता है कि जीवन के किस वर्ष में, कौन रेखा, कितना या कैसा फल देगी ? यदि वह रेखा स्थित और शुभ है, तो रेखा का स्पष्ट भाग बहुत अच्छा फल और अस्पष्ट भाग कम अच्छा फल वाला होगा। यदि उस रेखा की स्थिति अशुभ है, तो मोटे स्पष्ट भाग में अधिक बुरा फल अस्पष्ट भाग में कम बुरा फल देगी। डोरे से रेखा की लंबाई नापकर उपरोक्त रीति से यह हिसाब लगाया जा सकता है कि किसी रेखा का जीवन के किस वर्ष में कैसा फल होगा ?

सप्तवर्षीय परिवर्तन नियम के अनुसार रेखाओं का विशेष फल जानने का तरीका यह है कि किसी रेखा के बारे में उपरोक्त रीति से पहले यह मालूम करना चाहिए कि वह जीवन के किसी भाग में कितने वर्ष तक फल देगी ? जैसे किसी रेखा की स्थिति देखकर यह मालूम हो गया कि वह रेखा २० वर्ष की आयु से लेकर ७० वर्ष की आयु तक ५० वर्ष फल देगी। इस पचास वर्ष को सप्तवर्षीय परिक्रमा में बाँट दीजिए। सात चक्र पूरे हुए और दो वर्ष बचे। इन चक्रों का हर एक आरंभिक वर्ष इस रेखा के फल से विशेष रूप से सम्मिलित होगा। जैसे स्थिति के अनुसार उस रेखा

का फल धन प्राप्त होगा है, तो समझ लीजिए कि उपरोक्त रेखा के अनुसार, २०, २६, ३३, ४०, ४७, ५४, ६१, ६८ वर्ष की आयु में विशेष रूप से धन की प्राप्ति होगी। यदि उस रेखा का स्थिति के अनुसार फल धन नाश होता, तो यही वर्ष विशेष रूप से धन नाश करने वाले होते।

इस प्रकार हर रेखा का सप्तवर्षीय परिभ्रमण के नियमानुसार शुभाशुभ फल की विशेषता जानी जा सकती है। रेखाएँ डोरे की सहायता से सही रूप से नापकर ध्यानपूर्वक गणित किया जाए, तो जन्म पत्र की योगिनी एवं विंशोत्तरी दशा के अनुसार हस्तरेखाओं के अनुसार जन्म-पत्र भी बन सकती है। जन्म समय ठीक मालूम न होने से कभी-कभी इष्ट गलत हो जाने से जन्म-पत्र के फलों में अंतर भी पड़ सकता है, पर हस्तरेखाओं के अनुसार निर्धारित किया हुआ फलादेश अपेक्षाकृत अधिक ठीक निकल सकता है।

आकृतियों के फल

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र में स्त्री का बायाँ हाथ और पुरुष का दायाँ हाथ देखने का विधान है। रेखाओं के मिलने से हाथ में कहीं-कहीं कुछ आकृतियाँ-सी बन जाती हैं। उन आकृतियों को भारतीय सामुद्रिक शास्त्री विशेष महत्त्व देते हैं और इनके अनुसार फल निश्चय करते हैं।

भारतीय हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार जिस व्यक्ति के हाथ में मछली के समान रेखा हो, तो उसके काम सिद्ध होते हैं, वह धनाढ्य और संतानवाला होता है। जिसके हाथ में तराजू, मकान या वज्र जैसी आकृति हो, उसका व्यापार खूब चलता है। जिसके हाथ में कमल पुष्प, धनुष, तलवार, चक्र या अष्टकोण का चिह्न हो, वह योद्धा, धनवान होता है और स्वस्थ रहता है। त्रिशूल जैसा चिह्न हो

तो वह राजदरबारी, सात्त्विक प्रकृति का और शुभ कार्य करने वाला होता है। अंकुश या कुंडल के चिह्न हों, तो राजमंत्री, नेता एवं महापुरुष बनता है। पर्वत, कंकण, मनुष्य का सिर, पंख जैसे चिह्न हों तो पराक्रम, यश, आदर एवं विजय का सेहरा उसके सिर पर बँधता है। सूर्य, चंद्र, बेल, नेत्र, त्रिकोण, मंदिर, हाथी, घोड़ा की आकृति हाथ के किसी स्थान में हों, तो उसे धनवान, सुखी और समृद्ध होने का चिह्न समझना चाहिए। अँगूठे के बीच में जौ का चिह्न हो, तो वह ऐश्वर्य प्राप्ति का लक्षण है। तर्जनी (अँगूठे के पास की) और मध्यमा (बीच की उँगली की जड़) में जौ का चिह्न हो, तो उस व्यक्ति को दांपत्य सुख की प्राप्ति होती है और पारिवारिक जीवन आनंदमय रहता है।

जिसके हाथ में शंख, ध्वजा या नासिका जैसी रेखा हो, तो वह असाधारण विद्वान होता है। माला, तार, रथ, कुंडल, छत्र, जैसे चिह्न राजाओं के हाथों में होते हैं। हाथ में जितने यव (जौ) के चिह्न हों, तो वे विद्या की अधिकता प्रकट करते हैं। इसी प्रकार मछली की आकृति से यश का, हथियारों से वीरता का, कोठरी से धन का तथा त्रिकोणों से स्वास्थ्य का परिचय प्राप्त होता है। हाथ में जितने कमल हों, वे धर्म वृद्धि सूचित करते हैं।

उँगलियों में आड़ी रेखाएँ"—— " इस प्रकार की जितनी होंगी वे क्रोध एवं लोभ की प्रतीक हैं। सद्गुण और सत्कार्यों के अनुसार उँगलियों में '।' इस प्रकार की खड़ी रेखाएँ उत्पन्न होती हैं। एक दूसरे को काटती हुई '+' इस प्रकार की रेखाएँ मानसिक बेचैनी, चिंता, शोक एवं वेदना का होना प्रकट करती हैं। दुस्साहसी लोगों की उँगलियों में बहुत छोटी, आड़ी, टेढ़ी रेखाएँ देखी जाती हैं।

यदि अँगूठे की जड़ में '४' चार का अक्षर-सा बना हो, तो वह निष्ठुरता, क्रूरता और लड़ाई-झगड़े की प्रवृत्ति का सूचक है। यदि कलाई में से कटा हुआ-सा त्रिकोण हो, तो उसका अधिकांश जीवन परदेश में व्यतीत होता है। अनामिका उँगली के तीसरे पोरुवे में पास-पास दो रेखाएँ हों, तो ऐसा व्यक्ति तीव्र बुद्धि वाला, कुशल और पराक्रमी होता है। कनिष्ठका (सबसे छोटी) उँगली की जड़ में जितनी छोटी-छोटी अस्त-व्यस्त रेखाएँ हों, उसी अनुपात से स्वास्थ्य की कमी यह समझनी चाहिए। मध्यमा (बीच की उँगली) की जड़ में जिसके दो रेखाएँ होती हैं, वह परिश्रमी और उत्साही होता है। कलाई पर साँप का चिह्न जिनके होता है, वे चोरी, छल तथा निकृष्ट कर्मों में रुचि रखने वाले देखे जाते हैं।

कनिष्ठका के तीसरे पोरुवे में गुणित '×' का निशान हो, तो मंद बुद्धि और संशयी होने का चिह्न समझना चाहिए। भोग-विलास में अधिक रुचि रखने वालों की अनामिका उँगली की जड़ में टेढ़े-मेढ़े निशान पड़ जाते हैं। अँगूठे के मध्य भाग में सर्प की जैसी टेढ़ी रेखा वाले व्यभिचारी होते हैं। उँगलियों के दूसरे और तीसरे पोरुवे की मध्य रेखा को काटती हुई यदि खड़ी रेखा दिखाई पड़े, तो उसे बुद्धि, विवेक, उदारता, सहृदयता का चिह्न समझना चाहिए। पहले-दूसरे पोरुवे की मध्य रेखा को काटती हुई खड़ी रेखा चाहे वह किसी भी उँगली में क्यों न हो, धन-वैभव, यश और भोग की प्रतीक है।

अँगूठे से स्वास्थ्य, तर्जनी से स्वभाव, मध्यमा से ज्ञान, अनामिका से वैभव और कनिष्ठका से पूर्व संचित शुभ-अशुभ, संस्कारों का पता चलता है। जो उँगली कृश, सुंदर, कुरूप आदि जैसी आकृति की हो, तो उसी के अनुसार उपरोक्त बातों की सूक्ष्म दृष्टि द्वारा जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सामुद्रिक विद्या के अभ्यासियों को चाहिए कि हाथ का ढाँचा, उँगली, अँगूठा, नाखून, हथेली की बनावट, ग्रहों का स्थान हस्तरेखाएँ, तिल, शंख, चक्र, मणिबंध तथा चिह्नों पर भली भाँति विचार करके फल की विवेचना करें। इस प्रकार गंभीरता और सूक्ष्मदृष्टि के साथ किया हुआ विचार प्रायः असत्य नहीं होता, ऐसा हमारा अनुभव है।

हस्तरेखा पर विश्वास का अर्थ यह है कि व्यक्ति अपने 'कर' याने हाथ के 'कर्म' पर विश्वास करें। सत्कर्मपरायण व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माण उचित रीति से कर सकता है। यह हस्तरेखाओं को भी अपने स्थूल एवं सूक्ष्म कर्म तथा विचार के प्रभाव से बदलने का विज्ञान है।



मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा